ॐ

तस्यैष आदेशो यदेतद्विद्युतो व्यद्युतदा इतीन्न्यमीमिषदाइत्यधिदैवतम् ।।४।।

ब्रह्म-विषयक यह दृष्टान्त उसके एक आदेश (उपदेश) के समान है। ब्रह्म तड़ित (बिजली) के समान चमके तथा नेत्रों के झपकने के समान छिप गये। (यह मानो पदार्थों को देखने और न देखने के लिए नेत्रों के खुलने और बन्द होने के समान है।) यह दृष्टान्त देवों के सन्दर्भ में है।

चुम्बक के पास रहने से लोहे के टुकड़े में भी चुम्बक के गुण आ जाते हैं; उसी प्रकार साधक जब अपने गुरुओं के निकट-सम्पर्क में रहता है, तब गुरु के गुण उसमें संचारित होते हैं। जिस प्रकार पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा भी स्वर्ण बन जाता है; उसी प्रकार दुर्जन भी योगियों और मुनियों के सम्पर्क में आने पर पूजनीय सन्त बन जाते हैं।

जिस उत्साह और तीव्रता के साथ आप लक्ष्मी, पुत्र, पत्नी आदि की सेवा करते हैं यदि उसका एक अंश भी सच्चे हृदय से भगवान् के लिए दें, तो अगले क्षण ही आपको भगवान् मिल जायेंगे। परमेश्वर के प्रति मुहूर्त मात्र का घनिष्ठ प्रेम, विरहाग्नि का ताप, मस्ती और आतुरता उन्हें प्रत्यक्ष कराने के लिए पर्याप्त है। ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

सहृदयता से आप महान् बनते हैं, जब कि दानवता का दामन पकड़ कर आप पशुओं की कोटि में पहुँचते हैं।

श्रद्धा के बिना की गयी प्रार्थना 'अरण्य-रोदन' है।

धर्म का उद्भव भय से होता है; लेकिन भक्ति और उपासना के बाद ईश्वर-साक्षात्कार में इसकी परिसमाप्ति होती है।

ईश्वर ही परम सुख का मूल है।

धर्म ही श्रेष्ठ जीवन की कुंजी है।

परमात्मा से तादात्म्य ही मानव-जीवन की मंजिल होनी चाहिए।

शुभ कर्म की परिभाषा यही है कि हम इससे ईश्वर के प्रति उन्मुख हों।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

मनुष्याकार जन्म ग्रहण करने से ही मानव-जीवन नहीं बन जाता; जीवन को निःस्वार्थ सेवा से बनता है, त्याग एवं वैराग्य से बनता है।

पुण्य-कर्म वे हैं, जो ईश्वर-प्राप्ति में सहायक हैं तथा पाप-कर्म वे हैं, जो ईश्वर-प्राप्ति में बाधक हैं।

अँधेरे को अपशब्द कहने की अपेक्षा स्वयं अपने हाथ में दीपक उठा लें, तो सर्वत्र प्रकाश होगा, अन्धकार विदूरित हो जायेगा।

मन, वचन और कर्म में जब तक समानता नहीं होगी, आप अशान्त रहेंगे। तीनों का समत्व ही शान्तिपूर्ण जीवन की आधारशिला है।ह्वह्वस्वामी चिदानन्द

सुख मानव की खोज का प्रमुख विषय

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मनुष्य जिन विषयों की निरन्तर खोज में संलग्न है, उनमें से एक है सुख। इस सुख की प्राप्ति की आशा में ही वह सोचता, बोलता, चलता, कार्य करता, खाता-पीता, प्रजनन करता है और यदि संक्षेप में कहें तो वह जीता है। कोई भी कष्ट भोगना नहीं चाहता है।

कष्ट से बच निकलने की कामना ही शिशुओं को माँ के अंक में जाने को बाध्य करती है; यही कामना नटखट बच्चों को एकत्रित करती है, उन्हें अपनी गुड़ियों के साथ खेलवाती तथा मिष्टान्नों में आनन्द मनवाती है। सुख-प्राप्ति की यह कामना ही युवकों को नारी, भोजन, मादक पेय, द्यूत तथा क्रीड़ा के विलास-केन्द्रों की ओर प्रेरित करती है। सुख की यह खोज ही व्यक्ति को सम्पत्ति, अधिकार, नाम, यश और भौतिक सुख-साधनों की खोज को बाध्य करती है। यह कामना उसे अपने सुख-साधनों में वृद्धि करने के लिए नवीनतर यन्त्रों तथा अपने गौरव, अधिकार तथा सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिए नवीनतर आयुधोंक्के आविष्कार करने की ओर धकेलती है।

खेद है कि सुख उसकी पकड़ से फिर भी बच निकलता है।

भस्मासुर राक्षस

वह इसके बदले में क्या पाता है? प्रत्येक प्रकार का इन्द्रिय-सुख मखमली आवरण के नीचे एक क्रूर बाघिन छिपाये रखता है। काम उसके मर्मस्थल को खा जाता है। मादक पेय स्नायविक दुर्बलता लाते हैं। जीवन के कृत्रिम साधन उसे अनेक व्याधियाँ देते हैं। कामनाएँ उसे स्वप्न में क्लेश देती हैं। महत्त्वाकांक्षाएँ उसकी बुद्धि को आच्छादित करती हैं। सम्पत्ति अपने साथ अशान्ति लाती है। परिवार का अर्थ है चिन्ता। जिन इन्द्रियों में वह सुख की खोज करता है, वे उसे दास बना देती हैं और उनके दबा देने वाले भारी भार के नीचे दब कर मनुष्य जोर से पुकारता हैह्वह्व'सुख कहाँ है?'

यदि वह इनसे बच भी जाये, यदि उसका भाग्य चमके भी तो अवश्यम्भावी वृद्धावस्था तो धीरे-धीरे प्रवेश करती ही है। विलास-केन्द्र जो उसकी युवा तथा प्रौढ़ावस्थाओं में सँभाल करते रहे थे अब उसे बार-बार क्लेशित करते हैं। हतोत्साह हो कर वह विलखता हैह्वह्व'सुख कहाँ है?'

हे महान् समताकारी महाकाल! आपके हाथों से कोई भी बच कर नहीं निकल पाया है। सिंहासनारूढ़ राजा, अपने अध्ययन-कक्ष में कवि, अपनी शिल्पशाला में चित्रकार, अपनी प्रिया की भुजाओं में नीच व्यभिचारी व्यक्ति, भोजन-काल में पेटू, अड्डे में द्यूतकर, गोष्ठी में आमोद-प्रमोद मनाने वालाह्वह्वसभी पर आपका आवरण समान रूप से पड़ता है। सहस्रों मानव-प्राणी प्रतिदिन इस लोक में अपना मर्त्य शरीर त्याग करते हैं; किन्तु जो थोड़े से बचे रहते हैं, वे सोचते हैं कि वे कभी नहीं मरेंगे। भला इससे अधिक

पागलपन क्या हो सकता है! नाम, यश, मित्र, सम्बन्धी, सम्पत्ति, सत्ता, पदह्नह्नइनमें से कोई भी व्यक्ति की अन्तिम श्वास के उपरान्त उसका अनुसरण नहीं करता है। जो पदार्थ अभी कुछ क्षण पूर्व उसके हृदय को इतने प्रिय थे, उन्हें उसके हाथ अनुभव नहीं करते, उसके नेत्र नहीं देखते, उसके कान नहीं सुनते, उसकी जिह्वा आस्वादन नहीं करती तथा उसकी नासिका नहीं सूँघती। सुख कहाँ है?

सम्पत्ति दस्युओं को जन्म देती है। नाम तथा यश शत्रु उत्पन्न करते हैं। अधिकार तथा महत्त्वाकांक्षाएँ युद्ध तथा दंगों में परिणमित होते हैं। स्वार्थपरता दुर्भिक्ष तथा आन्तरिक विद्रोह लाती है। तब सुख कहाँ है? यह प्रश्न अभी तक अनुत्तरित ही बना रहा है।

एकमात्र भूमा ही सुख है

सच्चा सुख भूमा में ही प्राप्त हो सकता है। ससीम पदार्थ में सुख नहीं है। भूमा अमर्त्य है, शाश्वत है। ससीम विनाशशील है, क्षणभंगुर है।

जो सुख नित्य है, जिस सुख से हम वंचित नहीं किये जा सकते, जो सुख हमें उस ओर नहीं ले जाता है जिसमें दुःख की झलक हो अथवा जिसमें दुःख के पुट को स्थान होह्नह्नदूसरे शब्दों में परमानन्दह्नह्नवही सच्चा सुख है। वही सुख वांछनीय है। वही भूमा है।

जिस अवस्था में व्यक्ति किसी दूसरे को नहीं सुनता, किसी दूसरे को नहीं देखता, किसी दूसरे को अनुभव नहीं करता, किसी दूसरे को नहीं सोचताह्नह्नवही भूमा है। एकत्व ही भूमा है। विविधता ससीम है।

आत्मा सर्वत्र है

जिसे यह लोकोत्तर अनुभव हो गया है, वह एकमात्र आत्मा को सर्वत्रह्नह्नअपने अन्तर और बाह्य देश में भीह्नह्नदेखता है। आत्मा समानधर्मी सत्त्व है। समग्र विश्व चेतना का एक पुंज है। सभी प्राणियों, समग्र मानव-जाति, उद्भिज-वर्ग, प्राणि-जगत् और सामान्यतया जड़ वस्तु के नाम से विख्यात पदार्थों का मूल चेतना में ही है। वह आत्मा है। भूमा इस असीम का अपरोक्ष आत्मगत अनुभव है। आनन्द, सच्चा शाश्वत असीम सुख एकत्व के दर्शन में ही है।

मैं निर्भय हूँ

जो सभी प्राणियों में अपनी आत्मा को और अपनी आत्मा में सभी प्राणियों के दर्शन करता है, वह निर्भय बन जाता है। वह इन्द्रियों के विषयों से मोहित नहीं होता है। उसके आनन्द की सूर्यवत् प्रकाश वाली दृष्टि के समक्ष शोक विगलित हो जाता है। वह किसी से भयभीत नहीं होता है और न कोई उससे भयभीत होता है। आनन्द उसकी सत्ता को भर देता है। और यह आनन्द संसर्गज है। उसके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में इस आनन्द का अन्तःक्षेपण होता है। इतना ही नहीं कि उसका इस विश्व में कोई शत्रु नहीं होता, अपितु उसकी उपस्थिति में प्रकट शत्रु भी अपना वैर-भाव त्याग देते हैं। वह किसी पदार्थ अथवा व्यक्ति से विशेष रूप से आसक्त नहीं होता है। उसका हृदय सभीह्नह्नजड़ तथा चेतनह्नह्नकी ओर प्रवाहित होता है। वह विविधता में एकत्व के दर्शन करता है।

देश तथा काल उसको नमन करते हैं और वहाँ से हट जाते हैं। वह एक महान् वर्तमान में निवास करता है। उसके लिए न तो कोई भूतकाल है और न

भविष्यत्। उसके लिए न तो 'यहाँ' है और न 'वहाँ'। उसके नेत्रों के सम्मुख त्रिकाल का भव्य परिदृश्य प्रकट रहता हैह्लएक विराट् दर्शन। वह शुद्ध चेतना के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं देखता है।

वह रुदन करते हुए शिशु में, क्रीड़ा करते हुए बालक में, उत्तेजित युवक में, किंकर्तव्यविमूढ़ प्रौढ़ व्यक्ति में तथा मोहभंग वृद्ध व्यक्ति में एक ही आत्मा को देखता है। इस प्रतीयमान परिवर्तन का आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं है। अधिक क्या कहें, मृत्यु भी अन्त नहीं है। यह एक अन्य प्रतीयमान परिवर्तन है। जीवन का सातत्य इससे परे भी बना रहता है। मनुष्य एक कोश के साथ सोता है और कुछ क्षणोपरान्त अन्य कोश के साथ जागता है। उसे मृत्यु का त्रास नहीं रहता। उसने स्वयं मृत्यु के पाश से अपने को बचा लिया है।

मैं आनन्द हूँ

उसने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया है। उसने इस मिथ्या धारणा को अस्वीकार कर दिया है कि सुख विषय-पदार्थों से प्रकट होता है। शरीर तथा मन के साथ अज आत्मा का असत् तादात्म्य विलीन हो जाता है।

उसने 'उसे' प्राप्त कर लिया है, जिसको प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति और अधिक कुछ नहीं चाहता। वह सर्वथा निष्काम है; क्योंकि अब उसके लिए कुछ भी प्राप्तव्य नहीं है। वह आत्म-साक्षात्कार से प्रकट होने वाले अनिर्वचनीय आनन्द से ओत-प्रोत है।

अन्दर देखें

इन्द्रियों की रचना इस प्रकार की गयी है कि उनकी सहज प्रवृत्ति विषय-जगत् की ओर जाने की है। यह बाह्यकरण मन की रश्मियों को विकीर्ण करता, बुद्धि को निर्बल बनाता तथा अन्तःप्रज्ञाजात बोध के नेत्र को अन्धा बना देता है। एकता को झूठमूठ में विविधता के रूप में चित्रित किया जाता है, असत्य सत्य-सा प्रतीत होता है, पीड़ा आनन्द-सी प्रतीत होती है तथा छाया अपने को स्वयं पदार्थ से भी अधिक आकर्षक प्रस्तुत करती है। यह प्रेय-मार्ग है, जिसका मन्द बुद्धि वाला अज्ञानी व्यक्ति अनुसरण करता है।

तथापि अन्तरात्मा के दर्शन का आकांक्षी एक असाधारण वीर अपनी दृष्टि अपने अन्दर की ओर मोड़ता है। वह अपने मन की किरणों को समेट लेता है। उसकी इन्द्रियाँ वैसे ही अन्दर खिंच जाती हैं जैसे कच्छप के अंग कर्पर के अन्दर सिमट जाते हैं। चित्त-वृत्तियाँ रुक जाती हैं। बुद्धि स्वयं को आत्मा के प्रति अर्पित कर देती है। अहं रिक्त कर दिया जाता है, जिससे उसकी सम्पूर्ण सत्ता आत्म-प्रकाश से आपूरित हो जाये। यह श्रेय-मार्ग है जिसका अनुसरण ज्ञानी व्यक्ति करता है।

जाज्वल्यमान आत्मा अन्दर है जो करोड़ों सूर्यों की आभा से देदीप्यमान है। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र तथा इस लोक के ज्योतिर्मय सभी पदार्थ इस आत्मा के तेज से प्रकाशित होते हैं। ऋषि जानते हैं कि इन्द्रियों की अपनी कोई स्वतन्त्र शक्ति नहीं है। आत्मा ही नेत्रों का नेत्र, श्रोत्रों का श्रोत्र तथा मन का मनह्लअन्तरात्मा है। आनन्द न तो पदार्थों में है और न इन्द्रियों में ही, वरंच यह अपनी आत्मा में ही है जिसे भूल से पदार्थों में आरोपित किया जाता है।

ये सभी पदार्थ पदार्थों के कारण प्रिय नहीं हैं, अपनी आत्मा के प्रेम के कारण ही यह सब संसार

प्रिय है। इस आत्मा का साक्षात्कार करना चाहिए। व्यक्ति को इस आत्मा के विषय में श्रवण करना चाहिए तथा उसे इस अन्तरात्मा का चिन्तन तथा ध्यान करना चाहिए; क्योंकि आनन्द उसमें ही है।

इस प्रकार जिसने इसका साक्षात्कार कर लिया है कि उसकी आत्मा यहाँ वर्तमान सभी पदार्थों का सर्वव्यापी सार है, उस व्यक्ति को शाश्वत आनन्द प्राप्त होता है, अन्य व्यक्ति को नहीं। उसने नित्य आनन्द के स्रोत को अपनी ही अन्तरात्मा में पा लिया है। शाश्वत आनन्द अन्दर है। वह इसकी व्यर्थ खोज बाह्य-जगत् में करके अपने जीवन को नष्ट कर रहा है। वह उस कस्तूरी-मृग से अधिक बुद्धिमान् नहीं हैं, जो उस सुगन्धि के स्रोत का पता लगाने के प्रयास में इधर-उधर भटकता फिरता तथा अपनी शक्ति को निःशेष करता है जो उसके अन्दर ही सदा वर्तमान रहती है।

अतएव जो अमरत्व-सुधा का पान करना चाहता है, उसे चाहिए कि वह दृष्टि को अन्दर मोड़े, इन्द्रियों का प्रत्याहरण करे, मन को शान्त करे, बुद्धि को तीव्र करे, भाव के साथ 'ॐ' का गान करे, आत्मा का ध्यान करे।

वह अपने अन्दर आत्मा के दर्शन करता है। वह प्रत्येक विषय को अपने अन्दर देखता है। वह अनुभव करता है कि आत्मा समग्र विश्व में व्याप्त है मानो उसे आवृत किये हुए है। आत्मा यथार्थतः एक है; किन्तु उसने यह विविधता का रूप वैसे ही धारण कर रखा है जैसे कि वायु तथा अग्नि यद्यपि एक हैं; पर वे जिस वस्तु के सम्पर्क में आते हैं, उसका ही रूप धारण कर लेते हैं। तथापि, आत्मा इन पदार्थों की स्थितियों से वैसे ही अप्रभावित रहता है जैसे कि समग्र विश्व के नेत्र के रूप में प्रकाशित होने वाला सूर्य पदार्थों के दोष से प्रभावित नहीं होता है।

आत्मा अकर्ता है, यह अभोक्ता है। इस तथ्य का साक्षात्कार व्यक्ति को संसार अथवा जन्म-मृत्यु के चक्र से परे जाने में सक्षम बनाता है। जो विवेकी पुरुष इस सत्य का साक्षात्कार करता है, वही शाश्वत सुख का उपभोग करता है, अन्य व्यक्ति नहीं। अमरता तथा चिरन्तन आनन्द उसके होते हैं।

भगवत्कृपा

यह आत्मज्ञान न तो अधिक अध्ययन से, न शास्त्रों के बार-बार श्रवण से और न कुशाग्र बुद्धि से प्राप्त होता है। आत्मा जिसको वरण करती है, उसको ही वह स्वयं को प्रकट करती है। भगवत्कृपा के बिना व्यक्ति एक उँगली भी नहीं उठा सकता है। हृदय के आन्तर-प्रकोष्ठ में स्थित प्रभु के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण की आवश्यकता है। सभी साधनाओं का एकमात्र लक्ष्य इस परिणामह्लह्लअहं के विनाशह्लह्लकी प्राप्ति है। अहं जब तक अपना शिर ऊपर उठाये रखता है, तब तक साधना में कोई प्रगति सम्भव नहीं है। इस अहं का अल्पतम अवशेष जब तक पूर्णतः दूर नहीं कर दिया जाता, तब तक भगवत्साक्षात्कार अथवा आत्म-साक्षात्कार असम्भव है। भगवान् कृष्ण की वंशी इस सत्य की प्रतीक हैह्लह्लअपने को रिक्त बनाओ, मैं तुम्हें भर दूँगा।

जब अहं नष्ट कर दिया जाता है, तब इस प्रकार रिक्त बने हुए स्थान को भगवत्कृपा तत्काल भर देती है जो प्रचुर मात्रा में प्रवाहित होती रहती है। भगवत्कृपा प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही इस आत्मा का साक्षात्कार कर सकता है। यह उपनिषदों की सुस्पष्ट घोषणा है।

(अनूदित)

स्वामी शिवानन्द : आधुनिक भारत के मार्ग-निर्देशक

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

दूसरों की खातिर अपनी सुख-सुविधा की उपेक्षा करना मानवता के सेवकों के जीवन का सामान्य लक्षण रहा है। आधुनिक सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज इसके अपवाद नहीं थे। उनकी कहानी एक संवेदनशील हृदय की कहानी है। वैराग्य-भाव के धनी पूज्य स्वामी जी मानवता के उन्नयन तथा सेवा के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित थे।

प्रबोधक, उद्‌बोधक तथा प्रेरक के रूप में पूज्य स्वामी शिवानन्द जी को कौन नहीं जानता! वह न होते तो आज अगणित साधक उच्चतर जीवन के क्षेत्र में प्रवेश न कर पाते। मलाया में दश वर्षों तक डाक्टर के रूप में अथक परिश्रम करने वाले पूज्य स्वामी जी के लिए जब गहन त्याग तथा सेवा करने की प्रसुप्त आकांक्षाओं की उपेक्षा करना असम्भव हो गया, तब वह सब-कुछ त्याग कर हिमालय की ओर चल दिये।

संन्यास में दीक्षित होने के तुरन्त बाद पूज्य स्वामी जी गहन निष्काम सेवा में रत हो गये। लगभग डेढ़ वर्ष के पश्चात् वह गहन तपश्चर्या का जीवन व्यतीत करने लगे। परन्तु भौतिकता में डूबी हुई मानवता उन्हें पुकारने लगी तथा वह ध्यान की गहराइयों से फिर निकल आये विश्व-सेवा करने के लिए।

पूज्य स्वामी जी की दृष्टि में मानवता के वर्तमान रोगों (अविश्वास तथा अधार्मिकता) का मूल कारण यह था कि मानव पवित्र आध्यात्मिक ज्ञान से दूर पड़ता जा रहा था तथा अज्ञान के गर्त में गिर रहा था। इसी कारण उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अध्यात्म के मूलभूत सत्यों का प्रचार-प्रसार करके तथा धर्मग्रन्थों की विषय-सामग्री को जन-साधारण के लिए उपलब्ध कराके अज्ञान के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया था। गंगा के पावन तट पर बने अपने कुटीर से उन्होंने विश्व के कोने-कोने तक अपना आध्यात्मिक सन्देश पहुँचाया। इसके शुभ परिणाम युवकों-वृद्धोंह्वह्वसभी में नैतिक तथा आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन के रूप में देखने को मिले।

प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास है तथा प्रत्येक सत्कार्य का सम्पादन ईश्वरोपासना हैह्वह्वऐसा समझते हुए पूज्य स्वामी जी ने अपना प्रत्येक कर्म किया। आधुनिक पीढ़ी को उन्होंने भारत की महान् संस्कृति-सभ्यता की महत्ता और भारतीय परम्पराओं तथा प्रतिभा से परिचित कराया। यह उनके प्रयासों का ही सत्परिणाम है कि आज समस्त धर्मों की अन्तर्निहित एकता की बात सामान्य व्यक्ति को भी समझ में आने लगी है। उन्होंने बार-बार इस बात को दोहराया था कि मानव-मानव के बीच के बाह्य अन्तर मात्र सतही हैं तथा प्रत्येक प्राणी के व्यक्तित्व का सार-तत्त्व समग्र विश्व में एक ही है और उसका स्वरूप आध्यात्मिक है। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक जीवन को विघटित होने से बचाया।

पूज्य स्वामी जी जानते थे कि भारत विश्व का आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक बनेगा; इसलिए उन्होंने भारत देश के जन-साधारण तक को मानव-जीवन के उच्चतर कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया। यही कारण है कि उन्होंने भारत के बालक, युवक, विद्यार्थी, नर-नारीह्वह्वसभी को सम्बोधित किया था। दिव्य जीवन संघ की अनेकानेक शाखाएँ उनकी शिक्षाओं की केन्द्र बनीं। आध्यात्मिक प्रचार में वह दक्ष थे। इतना ही नहीं, अन्य योग्य तथा सुपात्र व्यक्तियों को भी इस कला में दक्ष बनाने में वह पीछे नहीं रहे।

वह आजीवन पारस्परिक मतभेदों को दूर करने तथा प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों के बीच ऐक्य स्थापित करने के प्रभावी उपकरण बने रहे। अपने प्रभावोत्पादक लेखों, अपने उपदेशों, अपने पत्रों तथा दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के कार्य-कलापों के माध्यम से वह नैतिक तथा आध्यात्मिक क्रान्ति के युग-सर्जक बने। परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक जाति, पन्थ तथा धर्म के अगणित व्यक्ति उन्हें अपने मार्ग-दर्शक के रूप में स्वीकार करने लगे।

आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार के अपने कार्य में पूज्य स्वामी जी की प्रणाली बड़ी ही प्रभावकारी थी। वह सोये हुए मानव को जगा कर उसे प्रेरित करने तक ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेते थे, प्रत्येक व्यक्ति की पृष्ठभूमि तथा क्षमता के अनुसार वह उसे आध्यात्मिक विकास के व्यावहारिक कार्यक्रमों का भी सुझाव देते थे। इस प्रकार पग-पग पर वह साधकों को प्रबोधित करते, प्रोत्साहित करते तथा उनका मार्ग-दर्शन करते थे।

अन्य साधारण मिशनरियों की तरह वह धर्मान्ध नहीं थे। उन्होंने धर्म के प्रति युक्तिमूलक दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने आवश्यकतानुसार धर्म के कुछ तत्त्वों की आलोचना भी की। जीवन का आध्यात्मिक मार्ग ही उनका सर्वस्व था; परन्तु इस मार्ग के गड्ढों की ओर भी उन्होंने साधकों का ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार अध्यात्म-मार्ग के पथिक उनके मार्ग-दर्शन में निर्भीक हो कर आगे बढ़े थे।

उनकी शिक्षाओं तथा उपदेशों का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह है कि वह मतान्ध नहीं थे। उन्होंने मूलभूत सत्यों पर बल देते हुए सदैव व्यावहारिक धर्म की ही चर्चा की। धर्म के अनावश्यक तथा सतही तत्त्वों की उन्होंने स्पष्टतः निन्दा की।

आनन्द-कुटीर के इस सन्त ने अनास्था के अन्धकार में डूबे असंख्य व्यक्तियों के जीवन को आस्था, भक्ति तथा धन्यता के प्रकाश से आलोकित किया। उनके मार्ग-निर्देशन में धर्म एक ऐसी रचनात्मक शक्ति के रूप में उभरा, जो मानवता को निराशा से मुक्ति दिला कर आशा तथा आन्तरिक शक्ति प्रदान करती थी। मानवता के प्रति विशुद्ध प्रेम से प्रेरित हो कर किये जाने वाले इस आध्यात्मिक कार्य को सम्पादित करने वाला यह महान् पुरुष सदैव ब्रह्म में संस्थित रहने वाला व्यक्तित्व था जो सदा अपने शाश्वत केन्द्र-बिन्दु से ही अनुप्राणित रहा, उसी में जीवित रहा तथा उसी से गतिमान रहा। पार्थ के सारथि भगवान् कृष्ण का यह वचन कि 'मुझे सबमें देखो और सबको मुझमें देखो'ह्वह्वइस महान् आत्मा का मार्ग-दर्शक बन गया था।

(अनूदित)

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवाह करें अथवा न करें २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

किसी भी मूल्य पर काम पर नियन्त्रण करना ही चाहिए। काम को रोकने से एक भी रोग नहीं होता। इसके विपरीत इससे असीम शक्ति, सुख तथा शान्ति प्राप्त होती है। काम को नियन्त्रित करने के कुछ प्रभावकारी साधन भी हैं। व्यक्ति को प्रकृति के विरुद्ध जा कर प्रकृति से परे आत्मा को प्राप्त करना चाहिए। जिस प्रकार मछली नदी में धारा के प्रतिकूल उपरिनद में तैरती है, उसी प्रकार आपको अनिष्टकारी शक्ति-रूपी संसार-प्रवाह के विपरीत चलना होगा। तभी आपको आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति हो सकती है। काम एक अनिष्टकारी शक्ति है और यदि आप अक्षय आत्मानन्द को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको इस पर नियन्त्रण करना ही होगा। यौन-सुख कोई सुख नहीं है। यह मानसिक भ्रान्ति है। संकट, पीड़ा, भय, आयास तथा जुगुप्सा इसके साथ लगे रहते हैं। यदि आपको योग अथवा आत्म-विज्ञान की जानकारी हो जाये, तो आप इस भयानक रोग काम को सहज ही नियन्त्रित कर सकते हैं। भगवान् चाहते हैं कि आप आत्मानन्द का उपभोग करें। इसकी प्राप्ति इस संसार के इन सभी सुखों को त्यागने से ही हो सकती है। ये सुन्दरी स्त्रियाँ तथा सम्पत्ति आपको मोहित करने तथा अपने जाल में फँसाने के लिए माया के उपकरण हैं। यदि आप अपने क्षुद्र विचारों तथा दूषित कामनाओं के साथ सदा सांसारिक व्यक्ति बने रहना चाहते हैं, तो आप निश्चय ही ऐसा कर सकते हैं। आपको पूर्ण स्वतन्त्रता है। आप तीन सौ पैंसठ पत्नियों से विवाह कर सकते हैं और जितने हो सकें, उतने बच्चे प्रजनन कर सकते हैं। आपको कोई भी रोक नहीं सकता है। परन्तु आपको शीघ्र ही यह ज्ञात हो जायेगा कि यह संसार आपको आपके मनोनुकूल सन्तोष प्रदान नहीं कर सकता है; क्योंकि सभी पदार्थ दिक्काल तथा कारण पर आश्रित हैं। यहाँ मृत्यु, रोग, जरा, परेशानी, चिन्ता तथा आकुलता, भय, हानि, निराशा, असफलता, दुर्व्यवहार, शीत, ताप, सर्प-दंश, बिच्छू-डंक, भूकम्प तथा दुर्घटनाएँ हैं। आप एक क्षण के लिए भी किंचित् मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते; क्योंकि आपका मन काम तथा मल से पूर्ण है। अभी आपकी समझ दूषित तथा आपकी बुद्धि विकृत हो गयी है; अतः आप संसार के प्रातिभासिक स्वरूप तथा आत्मा के चिरन्तन सुख को समझ नहीं पा रहे हैं।

काम को प्रभावशाली ढंग से नियन्त्रित किया जा सकता है। इसके लिए अकाट्य विधियाँ हैं। काम को नियन्त्रित करने पर आप अपने अन्तर से, आत्मा से सच्चे सुख का उपभोग करेंगे। सभी व्यक्ति संन्यासी नहीं बन सकते। उनके बहुत से सम्बन्ध तथा आसक्तियाँ हैं। वे कामुक हैं, अतः वे संसार का त्याग नहीं कर सकते हैं। वे अपनी पत्नियों, बच्चोंह्नतथा सम्पत्ति से आबद्ध हैं। आपका तर्क-वाक्य अनुचित है। यह असम्भव है। यह अशक्य है। क्या आपने

विश्व-इतिहास के इतिवृत्त में कभी ऐसा सुना है कि सभी व्यक्तियों के संन्यासी हो जाने के कारण यह विश्व जन-शून्य हो गया है? फिर आप ऐसा असंगत तर्क-वाक्य क्यों प्रस्तुत करते हैं? यह आपके मूर्खतापूर्ण तर्क तथा उस शैतानी दर्शन को समर्थन करने के लिए आपके मन की एक विलक्षण चाल है, जिसका काम-वासना तथा यौन-तुष्टि एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। भविष्य में इस तरह की बातें न कीजिए। इससे आपकी मूर्खता तथा वासनामयी प्रकृति प्रकट होती है। इस संसार के विषय में आप चिन्ता न कीजिए। अपने काम से काम रखिए। ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। यदि सभी लोग जंगल में चले जायें और यह संसार जन-शून्य हो जाये, तब भी भगवान् पल-भर में अपने संकल्प मात्र से करोड़ों लोगों की तत्काल पल मात्र में सृष्टि कर देगा। यह देखना आपका कार्य नहीं है। अपनी काम-वासना के उन्मूलन के लिए उपाय खोज निकालिए।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विवाह एक अपरिहार्य तत्त्व नहीं माना जा सकता है। वास्तव में एक सच्चे साधक को निश्चय ही अपने को विवाहित जीवन की बेड़ियों से दूर, बहुत दूर रखना चाहिए। विवाह उसके लिए अभिशाप है। तथापि उस कामुक प्रकृति वाले व्यक्ति के लिए, जिसके लिए विषय-वासना को पराभूत करना अत्यन्त दुष्कर है, यह उसकी नैतिक असावधानी के लिए एक प्रकार का बाड़ा अथवा सुरक्षा प्रदान करने वाली तिजोरी है। अतः विवाह उन लोगों के लिए विहित हैॱॱऔर यह अधिसंख्यक मानव-जाति पर लागू होता हैॱॱजो अभी पूर्ण आत्म-निग्रह के जीवन के लिए तैयार नहीं हैं और इस भाँति उन्हें विवाह को एक संस्कार मानना चाहिए, किन्तु निश्चय ही इसे विषयासक्ति का अनुज्ञा-पत्र नहीं समझना चाहिए।

इस संसार में उत्पन्न हुए प्रत्येक व्यक्ति को विवाह करना अनिवार्यतः आवश्यक नहीं है। विवाह इस लोक में मनुष्य के जीवन को नियमित बनाने के लिए है। यदि समाज में विवाह की प्रथा न होती, तो जीवन अनियमित तथा पाशविक हो गया होता। किन्तु, जहाँ हृदय में काम-वासना नहीं है, जहाँ भगवान् के लिए प्रबल अभीप्सा है, जहाँ आध्यात्मिक खोज की आकांक्षा है, वहाँ विवाह अनिवार्य नहीं है। ऐसा व्यक्ति नैष्ठिक ब्रह्मचारी का जीवन यापन कर सकता है।

माता-पिता को अपने पुत्रों को विवाह करने के लिए विवश नहीं करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों के आध्यात्मिक संस्कारों को कुचलना नहीं चाहिए। अनेक युवक जिनमें आध्यात्मिक जागृति है, करुण शब्दों में मुझको लिखते हैंॱॱ''प्रिय स्वामी जी, मेरा हृदय उच्चतर आध्यात्मिक विषयों के लिए आतुर है। मुझे सांसारिक विषयों में कोई रुचि नहीं है। मेरा परिवेश अनुकूल नहीं है। मैं विवाह-जाल में उलझ गया हूँ। मेरे माता-पिता ने मेरी इच्छा के विपरीत मुझे विवाह करने को विवश किया। मुझे अपने वृद्ध माता-पिता को तुष्ट करना था। उन्होंने मुझे कई प्रकार से धमकी दी। अब मैं रोता हूँ। मैं अब क्या करूँ?'' कुमार बालकों, जिनको इस संसार अथवा इस जीवन का कुछ बोध नहीं, का आठ या दश वर्ष की आयु में विवाह कर दिया जाता है। हम बच्चों को बच्चे उत्पन्न करते देखते हैं। शिशु माताएँ हैं। लगभग अठारह वर्ष

के बालक के तीन बच्चे हैं। क्या ही भयानक स्थिति है ! बाल-विवाहों से वीर्य का अकाल नाश होता है। इससे शारीरिक तथा मानसिक अधःपतन होता है। कोई भी दीर्घायु नहीं होता है। सभी अल्पजीवी हैं। बार-बार के प्रसव से स्त्रियों का स्वास्थ्य नष्ट होता है तथा अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

अपने पहनावे तथा भूषाचार-सम्बन्धी विषयों में पाश्चात्य जगत् की विविध आदतें अपनायी हैं। आप निकृष्ट अनुकरण करने वाले प्राणी बन गये हैं। पाश्चात्य जगत् के लोग जब तक परिवार का अच्छी तरह भरण-पोषण करने योग्य नहीं हो जाते, विवाह नहीं करते हैं। उनमें अधिक आत्म-निग्रह है। वे प्रथम जीवन में एक अच्छा पद प्राप्त करते हैं, धनोपार्जन करते हैं, कुछ बचत करते हैं और तभी विवाह के विषय में सोचते हैं। यदि उनके पास पर्याप्त धन नहीं होता, तो वे आजीवन कुँवारे ही रहते हैं। वे इस संसार में भिक्षुओं को उत्पन्न करना नहीं चाहते हैं जैसा कि आप करते हैं। जिसने इस संसार में मानव के दुःखों को समझ लिया है, वह स्त्री के गर्भ से एक बच्चा उत्पन्न करने का साहस कदापि नहीं करेगा।

श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन

मन तथा इन्द्रियों को अनुशासित कीजिए। दिव्य सद्गुणों का अर्जन कीजिए। साधन-चतुष्टय से सम्पन्न बनिए। श्रुतियों का श्रवण कीजिए। आत्मा पर मनन तथा निदिध्यासन करें। इससे आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति होगी।

अन्ध-श्रद्धा न रखिए। सावधानी के साथ विचार कीजिए, तदुपरान्त किसी वस्तु को मानिए। काम, क्रोध, लोभ आदि का उन्मूलन कीजिए। जो-कुछ भी आपके पास मानसिक, भौतिक तथा नैतिक है, उसमें दूसरों को भी भाग दीजिए। दूसरों की सेवा करने में प्रसन्नता का भान कीजिए। आपके अभिमान तथा मद स्वतः ही दूर हो जायेंगे।

अपने हृदय-प्रदीप में वैराग्य का तेल डालिए। भक्ति की बत्ती डालिए। सतत ध्यान के द्वारा ज्ञान की ज्योति को जलाइए और देखिए। अज्ञान का अन्धकार अपने-आप ही दूर हो जायेगा। आप पूर्ण ज्ञानी बन जायेंगे।

स्वामी शिवानन्द

इतिहास एवं पुराण २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

शिक्षण-विधियों के रूप में इतिहास तथा प्रतीकशास्त्र

महाकाव्यों में विषय का प्रतिपादन जिस ढंग से किया गया है, वैसा वेद-संहिताओं और उपनिषदों में नहीं पाया जाता। वेद-उपनिषदों में परम सत्य अथवा परम तत्त्व की बात सीधे कह कर उसका समर्थन ब्रह्माण्ड-व्यापी एकता का रहस्योद्घाटन करके किया जाता है। इस प्रकार पाठक की बुद्धि पर ठोस तथ्यों के अपरोक्ष निरूपण का भार सीधा ही डाल कर विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है।

महाकाव्यों और पुराणों के ग्रन्थकार यह भली-भाँति जानते थे कि विचार-सम्प्रेषण की यह विधि जन-साधारण के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः उन्होंने एक ऐसी विधि अपनायी जो सर्व-साधारण के लिए बोधगम्य थी। मन की यह प्रवृत्ति है कि वह सुन्दरता को प्रेम करता है, चमत्कार के प्रति श्रद्धा रखता है, रहस्य से भय खाता है तथा शौर्य का अनुकरण करता है। विद्वज्जन तथा दार्शनिक प्रकृति के व्यक्तियों में भी प्रेम और सहानुभूति की भावनाएँ रहती हैं। न्याय का आदर्श उन्हें भी प्रिय रहता है। उच्च कोटि के तत्त्वमीमांसक भी मानवीय पक्षों से अछूते नहीं रहते। मानवीय व्यक्तित्व के इस पहलू को समझना थोड़ा कठिन है; परन्तु जो इसे नहीं समझता, वही अपने सामाजिक जीवन में असफल रहता है। मानव-मन को सदैव विविधता प्रिय है। एक रसता उसे भाती नहीं। यदि वह प्रेम करता है, तो घृणा भी करता है। वह पूर्वाग्रहों के घेरे में भी फँसता है। यहाँ तक कि वह कट्टर धर्मान्ध तथा दुराग्रही भी बन जाता है। इतने विलक्षण संघटकों का मिश्रण है यह मन। वेद और उपनिषदों में मन की इस विलक्षणता का ध्यान नहीं रखा गया है। मानव अपने वास्तविक स्वरूप में जैसा भी है, उसे अपने दैनिक जीवन में मित्र, दार्शनिक तथा मार्ग-दर्शक की आवश्यकता पड़ती ही है। इस आवश्यकता की पूर्ति ये दोनों महाकाव्य भली-भाँति करते हैं।

ये महाकाव्य हतोत्साहित मानवता के लिए प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उन अपराजेय राम के बारे में सोचिएह्नसत्य और न्याय के जो आदर्श थे, दुष्टता के लिए जो वज्र के समान थे, सरल और निश्छल व्यक्तियों के लिए जो सान्त्वना के स्रोत थे, शरणागत शत्रु के लिए जो क्षमा के साक्षात् विग्रह थे, अपने चरित्र-बल से जो प्रत्येक मानव के हृदय में भक्ति, श्रद्धा और भयह्नये तीनों प्रकार के भाव एक-साथ उत्पन्न करते थे।

उन अद्भुत कृष्ण के बारे में विचार कीजिए जो पृथ्वी और स्वर्गलोक में एक ही समय में विचरण करने की क्षमता रखते थे, स्व-कथन मात्र से ही भूप-भूपालों को सत्ता-विहीन कर सकते थे, जो सर्वशक्तिमान् ब्रह्म के ब्रह्माण्ड-व्यापी स्वरूप को धारण कर सकते थे; परन्तु जिन्होंने युधिष्ठिर के

राजसूय-यज्ञ में पधारने वाले अतिथियों का पद-प्रक्षालन भी किया था, जो उनसे प्रेम-भाव रखने वाली रूपवती बालाओं को मोहित कर लेते थे, जिन्होंने आँसू बहाती द्रौपदी को सान्त्वना प्रदान की थी, विषाद-युक्त आत्म-संशयी अर्जुन में जिन्होंने साहस का संचार किया था, रणभूमि में जिन्होंने भयभीत करने वाले राजाओं को भी आतंकित कर दिया था, जो दर्शन के गहनतम तथ्य उद्घाटित कर सकते थे, शूरवीर सैनिक की तरह युद्ध कर सकते थे, ध्यानस्थ योगियों को दिव्य दर्शन दे सकते थे, मात्र दृष्टिपात करके कौरवों की समूची सेना को सम्मोहित कर सकते थे, ब्रह्मा और रुद्र से मित्रवत् व्यवहार कर सकते थे, परन्तु जो महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथि भी बने थे, जो सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता के दिव्य स्रोत थे, जो सर्वोत्तम योगाचार्य थे और जो प्रेम के केन्द्र-बिन्दु और कर्मठता के जीवन्त उदाहरण थे। उनका व्यक्तित्व लौकिकता और अलौकिकता के सम्मिश्रण से पूर्ण बन गया था।

व्यास ने कृष्ण का जो अद्भुत विवरण प्रस्तुत किया है, वह पाठकों को आनन्दातिरेक की ऐसी स्थिति में पहुँचा देता है जिसे तनिक भी अधिक गहराई से मनन करने से सम्भवतः उनके भौतिक शरीर झेल न सकें।

युधिष्ठिर और उनके सदाचार पर मनन कीजिए ह्नह्नजब भरी सभा में द्रौपदी का अपमान हुआ था तो कौरवों की नीचता और ढिठाई को उन्होंने किस प्रकार सहन किया था, जिन्होंने दुष्ट दुर्योधन को भी गन्धर्व चित्रसेन के बन्धन से मुक्त करवा दिया था, वनवास की अवधि में शत्रुओं का सामना करने के लिए शस्त्र धारण करने हेतु भाइयों के उत्तेजित करने पर भी जिन्होंने अपने असीम धैर्य का परिचय दिया था, अपनी सुध-बुध के बल पर ही जो निर्भीकता से कौरवों की सेना के बीच गुरु जनों का आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँच गये थे, जिन्होंने यक्ष के चंगुल में फँसे अपने चारों भाइयों में अपने सगे पराक्रमी भाइयों के स्थान पर अपने सौतेले भाई की प्राण-रक्षा के लिए उनसे (यक्ष से) प्रार्थना की थी, जिन्होंने स्वर्गारोहण के समय एक वफादार कुत्तेह्नह्नजिसने पूरी यात्रा में उनका साथ दिया थाह्नह्नको छोड़ कर स्वर्ग जाना पसन्द नहीं किया था। कौन ऐसा होगा जो आँखों में आँसू लाये बिना युधिष्ठिर का स्मरण कर सके!

अर्जुन की दक्षता, भीम की शक्ति, हनुमान् की वीरता, द्रौपदी के दुःख, सीता के संकट, दमयन्ती की दुर्दशा, लक्ष्मण के साहस, भरत के त्याग, भीष्म की महत्ता, वसिष्ठ के दिव्य गौरव पर भी विचार कीजिए, जिनके प्रभाव से धरती के अत्यन्त प्रभावशाली अस्त्र-शस्त्र भी निष्फल हो गये थे।

व्यास की विद्वत्ता, शुक के ब्रह्म-साक्षात्कार और दिव्य नर-नारायण के गौरव को भी क्या कोई भुला सकता है! इन महापुरुषों का जीवन-चरित्र पढ़ते समय कौन ऐसा होगा जो उच्च जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा तथा आश्चर्य, पुलक, प्रेम, आतंक की भावनाओं से ओत-प्रोत न हो जाये! ये उदाहरण इन महाकाव्यों में भरे पड़े उन अगणित अविस्मरणीय उपदेशों में से चुन कर लिये गये हैं जो मानवता से दिव्यता की ओर की ऊर्ध्वमुखी यात्रा में मानव का पथ-प्रदर्शन करते हैं तथा उसके लिए अमूल्य पैतृक सम्पत्ति के समान हैं। **(अनूदित)**

कर्म बन्धनकारी किस प्रकार नहीं होंगे

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

भगवान् श्री कृष्ण गीता में अर्जुन को बताते हैं कि वे हमारे इस विश्व में, हमारे जीवन में और हमारे नित्य-प्रति जीने में कैसे विद्यमान हैंह्वह्व''मैं तुम्हारे समक्ष इस विश्व के रूप में प्रकट हूँ। यह सब-कुछ मेरे द्वारा ही व्याप्त है।'' और गीता के दशम अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन को यह बताते हैं कि सृष्टि के प्रत्येक वर्ग में विशेष रूप से उनकी विद्यमानता कौन-सी वस्तु में है। ''वृक्षों में मैं अमुक वृक्ष हूँ, नदियों में मैं अमुक नदी हूँ, हाथियों में मैं अमुक हाथी हूँ, ऋतुओं में मैं अमुक ऋतु हूँ, कवियों में मैं अमुक नाम का कवि हूँ, इत्यादि, इत्यादि।'' और इस प्रकार अपनी विशेषताओं के सम्बन्ध में बता कर संक्षेप रूप से कहते हैंह्वह्व''यहाँ जो-कुछ भी महिमाशाली, समृद्ध अथवा शक्ति-सम्पन्न है, उसे मेरी ही महिमा के प्रकटीकरण का एक अंश समझो; क्योंकि मैं सर्वातीत हूँ और अपने एक अंश मात्र से ही सम्पूर्ण विश्व को धारण किये हुए हूँ।''

और तब अर्जुन अपने मन में सोचने लगता हैह्वह्व''मैं कैसा व्यक्ति था। मैं समझता था कि भगवान् मेरे से कुछ भिन्न कहीं दूर निर्जन में हैं, जिन्हें जान पाना अति-दुर्गम है। अब मुझे ज्ञात हुआ कि वह तो सब जगह, सर्वत्र हैं; मेरे समक्ष, इस वस्तु में, उस वस्तु में, सभी में विद्यमान हैं।'' और, वह अत्यधिक उत्सुकता से भर जाता है। भगवान् जैसा बता रहे हैं, वैसे उन्हें देखने की उसे गहन उत्कण्ठा होती है और वह उन्हें कहता हैह्वह्व''हे प्रभु, आप जैसा कह रहे हैं, वैसा क्या मुझे सचमुच दिखा सकते हैं?'' भगवान् ने उत्तर दिया कि इन चर्म-चक्षुओं द्वारा ऐसा होना सम्भव नहीं है; किन्तु वे उसे दिव्य चक्षु प्रदान करेंगे, जिससे कि वह ऐसा देख सके।

हमें भी विशिष्ट दृष्टि की आवश्यकता है। हम समझते हैं कि भगवान् ऐसे हैं जिन्हें देखने के लिए हमें दीर्घकालीन कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। किन्तु हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना चाहिए। हमें उनको अपने निकटतम और प्रियतम के रूप में देखना होगा। भले ही हम मुख से बोल देते हैंह्वह्व''आप मेरी माता हैं, आप मेरे पिता हैं, आप मेरे बन्धु हैं और सखा हैं।'' किन्तु, हममें उनके प्रति ऐसी भावना है ही नहीं, जैसी अपने अत्यन्त निकटतम प्रिय सम्बन्धी के प्रति होती है।

जितना अधिक हम इसे समझने का प्रयत्न करते हैं और अपने भावों तथा मन में इसे अनुभव करना आरम्भ कर देते हैं, उतना ही अधिक हमारा योग हो जाता है, उतना ही अधिक हम निकटता और घनिष्ठता से उनके (भगवान् के) साथ सम्बद्ध हो जाते हैं। वे हमसे कहीं दूर अनजान और हमसे अलग नहीं हैं, यह भाव हमें विकसित करना होगा। क्योंकि वह हमारे अत्यन्त निकट हैं, वह हमारे अपने हैं तथा अन्य किसी से भी बढ़ कर वह हमारे परिचित भी हैं।

यह हमें धीरे-धीरे अपने मन में अनुभव करना चाहिए। उनके साथ अपनी और अपने साथ उनकी घनिष्ठता की भावना को अपने हृदय में लाते रहें। इस पूर्णतया गहन सम्बन्ध की भावना को अपने मन में विकसित करना ही होगा। इसी प्रकार करने से ही योग सम्भव है। इसी से योग फलदायी होता है। और इस प्रकार करने से ही आप कार्य-कलापों के मध्य में रहते हुए भी योग में स्थित होने की सामर्थ्य पा जाते हो।

जब आप उनको अपने निकट देखने लग जाते हैं, उनको अपने परिचित बना लेते हैं, तब ही वास्तव में आप उनके साथ पूर्ण घनिष्ठता का सम्बन्ध स्थापित करते हुए कार्य कर सकते हैं। तब किये जाने वाले आपके कर्म आपको बाँधेंगे नहीं। तब यह संसार आपको बाँध नहीं सकेगा, क्योंकि आप तो पहले से ही निकट परिचय, घनिष्ठता और प्रेमपूर्ण आत्मीयता से भगवान् के साथ प्रेम-बन्धन में बँधे हुए होंगे। सांसारिक कहलाने वाले कार्यकलापों के मध्य में रहते हुए भगवान् में निवास होने का यही रहस्य है, क्योंकि भगवान् ने तो यह स्पष्टतया कहा ही है कि वह सबसे दूर और अलग कहीं नहीं हैं, प्रत्युत हमारे संसार में, हमारी समस्त गतिविधियों में और भूतल के हमारे इस जीवन में ही विद्यमान हैं।

हमारे अन्तर्निहित योग (आन्तरिक योग) में सतत स्थिति का रहस्य यह है। वह आपके निकटतम और प्रियतम हैं। इसे मन में दृढ़तापूर्वक बैठा लेना है, प्रतिक्षण इसे अनुभव करते रहना है। इस प्रकार आपकी साधना आगे बढ़नी चाहिएह्लह्लआपकी बुद्धि इस रहस्यमय सत्य को समझती हुई, आपका मन इस गुह्य सत्य पर मनन करता हुआ, आपका हृदय सदैव इस गहन सत्य के प्रति जागरूक रहता हुआ! आध्यात्मिक जीवन और परमात्म-प्राप्ति की सफलता का यही रहस्य है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

चिदानन्द-वाणी

एक दिन हम सबको इस संसार से जाना ही है। मुट्ठी बाँध कर कुछ लाये थे। यहाँ संसार के बन्धनों में फँस कर, माया-जाल में उलझ कर सब-कुछ खो दिया और अब खाली हाथ पसारे चले जायेंगे। व्यक्ति यदि अपने साथ कुछ ले जाना चाहता है, तो उसे कुछ समेट कर रखना चाहिए। धन-दौलत, मान-सम्मान, स्त्री-पुत्र तो कोई साथ नहीं जाता; तब जो साथ जा सकता है, उसी के लिए प्रयास करना चाहिए। सेवा, त्याग, भजन, कीर्तन, पूजा, भक्तिह्लह्लइसे कोई लूट नहीं सकता। यही शाश्वत सम्पत्ति है।

* * *

जीवन 'साधना' तथा जीवन-क्रम एक 'आध्यात्मिक प्रक्रिया' है। साधारणतया मन, वचन और कर्म से यज्ञ-कार्य सम्पन्न होता है। इन्हें स्वार्थ-सिद्धि मात्र के लिए प्रयुक्त नहीं करना चाहिए, अन्यथा इनसे केवल अहंकार में ही वृद्धि होती है। सम्पूर्ण जीवन तथा उसकी प्रवृत्तियों को प्राणिमात्र की सेवा, सुख तथा उपकार के निमित्त उत्सर्ग कर देना चाहिए।

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

आध्यात्मिक उपदेश ५

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

अन्तर्यामी

हे सोहराब! मनुष्य कई प्रकार के काम करता है। शरीर से जब प्राणवायु निकल जाता है, तब शरीर धरती पर शव बन कर पड़ा रह जाता है। उससे दुर्गन्ध निकलती है। शव को जलाया जाता है या गाड़ा जाता है या नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

मृत शरीर न तो बोल सकता है, न देख सकता है और न सुन सकता है। यह शरीर किसने बनाया है? इसका निर्माता ईश्वर है। वह अन्तर्यामी है। उसी की शक्ति से यह शरीर चलता-फिरता और काम करता है। उसी की शक्ति से तुम देखते हो, सुनते हो, सूँघते हो, अनुभव करते हो, बोलते हो, सोचते हो और जानते हो।

उसको जान लो। तुम अमर बन जाओगे। तुम्हें परम शान्ति मिलेगी।

संयत रहो

कम खाओ, ज्यादा पिओ। ज्यादा पढ़ो, कम खेलो। बैठो कम, चलो ज्यादा। गपशप कम करो, सीखो ज्यादा। कम सोओ, प्रार्थना अधिक करो। लो कम, दो ज्यादा।

कम बोलो, करो ज्यादा। रोओ मत, खूब हँसो।

भले बनो। भला करो। समझदार बनो। प्रसन्न रहो। मुस्काओ। खेलो-कूदो। नाचो-गाओ। भजन करो। हँसो। सेवा करो। प्रेम करो। दान दो। संयम रखो। शुद्ध रहो। ईश्वर का ध्यान करो। आत्मज्ञान प्राप्त करो।

संसार क्या है

क्या तुमने जादूगर को देखा है? तुम्हारे सामने वह अपनी मुट्ठी खोल कर दिखलायेगा। उसमें कुछ नहीं होगा। झट से वह मुट्ठी बन्द कर लेगा और उसमें से मुर्गा या साँप या कुछ-न-कुछ बाहर निकलता दिखलायी पड़ेगा। फिर मुट्ठी खोलते ही सब गायब हो जायेगा। क्या तुम्हें विश्वास है कि सचमुच उसके हाथ में साँप था? बिलकुल नहीं। यह केवल भ्रम है, इन्द्र-जाल है, जादू है। उसकी मुट्ठी में साँप नहीं है।

ईश्वर एक जादूगर है। उसके हाथ में एक साँप दीखता है, जिसे हम संसार कहते हैं। जादूगर के हाथ के साँप की तरह यह भी मिथ्या ही है। तुरन्त ही यह गायब हो जायेगा और झट से दिखायी भी देने लगेगा। वास्तव में संसार कुछ है ही नहीं।

मकड़ी जाला किससे बनाती है? अपनी ही शक्ति से, धागे से बनाती है। फिर उसको निगल भी लेती है। फिर जाला नहीं रह जाता। इसी प्रकार ईश्वर भी अपने से ही यह संसार बनाता है और अपने में ही समेट भी लेता है। इसलिए संसार ईश्वर ही है। सब ईश्वर है, ईश्वर ही सब-कुछ है। सबकी पूजा करो, सबसे प्रेम करो; क्योंकि सब-कुछ ईश्वर ही है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

वार्षिक साधना सप्ताह तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि आराधना

अध्यात्म-पथ पर अग्रसर साधकों एवं मुमुक्षु-जिज्ञासुओं को निर्देशित और प्रेरित करने के लिए मुख्यालय शिवानन्द आश्रम द्वारा २६ जुलाई से १ अगस्त २०१० तक ४७ वाँ साधना सप्ताह मनाया गया। समस्त कार्यक्रम 'शिवानन्द सत्संग भवन' (ऑडिटोरियम) में आयोजित किये गये थे। सप्ताह के प्रत्येक दिवस के कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी तथा श्री स्वामी गुरुप्रेमानन्द जी द्वारा प्रातःकालीन प्रार्थना-ध्यान के सत्र से होता था, जिसके उपरान्त भजन-कीर्तन सहित प्रभातफेरी की जाती थी। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने योगासन कक्षाओं का संचालन किया। पूर्वाह्न सत्र का प्रारम्भ कीर्तन तथा श्री स्वामी कैवल्यानन्द जी और ब्रह्मचारी श्री नागराज जी द्वारा श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण के साथ किया जाता था। मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्तों तथा अन्य संस्थाओं के आध्यात्मिक जगत् के प्रकाण्ड विद्वानों ने अपनी दिव्य उपस्थिति एवं प्रेरणाप्रद प्रवचनों द्वारा पूर्वाह्न और अपराह्न सत्रों में साधकों को आशीर्वादित किया।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज (कैलास आश्रम, ऋषिकेश) ने अपने उद्घाटन-प्रवचन में ईश्वरानुभूति की प्राप्ति के लिए ज्ञानयोग साधना पर बल दिया। श्री स्वामी जी ने कहा कि आत्मा जो कि शाश्वत है, की प्राप्ति अनित्य कर्मों द्वारा नहीं की जा सकती। इसे केवल ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है और **'तद् विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्'**ह्नह्नअर्थात् गुरु-कृपा के बिना व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। अतः साधक को विवेक, वैराग्य तथा मुमुक्षुत्व से सम्पन्न हो कर, ब्रह्मनिष्ठ गुरु के सान्निध्य में जा कर श्रुतिवाक्यों का श्रवण करना चाहिए। तत्पश्चात् उनके अर्थों पर मनन करना तथा सतत गहनता से निदिध्यासन करना चाहिए। तब जा कर अज्ञान की ग्रन्थि का भेदन होगा और साधक का परम तत्त्व से साक्षात्कार होगा।

परम पूज्य दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द जी महाराज (स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश) ने अपने ज्ञानपूर्ण एवं शक्तिशाली उद्बोधन द्वारा साधकों को अपने निज वास्तविक स्वरूप के प्रति अज्ञान की निद्रा से जागृत करने के लिए आह्वान किया। गीता के श्लोकह्नह्न **'क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत'** को उद्धृत करते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि ब्रह्म जीव मात्र के भीतर निवास करता है, वह सबका द्रष्टा है; किन्तु स्वयं दिखायी नहीं देता है। वेद उद्घोषणा करते हैं कि हम उस सच्चिदानन्द ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं। वास्तव में तो हम इस शरीरत्रय से रहित, पंचकोशातीत, अवस्थात्रय के द्रष्टा सच्चिदानन्द ब्रह्म ही हैं, बस हम अपना वह वास्तविक रूप भूले हुए हैं, यही अज्ञान है जिसका कारण माया है!

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज (परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश) ने

श्रुतिवाक्यद्वय **'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म'** का महत्त्व एवं अर्थ अत्यन्त प्रांजल भाषा में करते हुए कहा कि द्वैत तो है ही नहीं, एकमात्र ब्रह्म की ही सत्ता है। ब्रह्म से भिन्न इस जगत् का अस्तित्व नहीं है। अद्वितीय ब्रह्म ने ही इस जगत् के रूप में स्वयं को प्रकट किया है। जिस प्रकार मिट्टी के बने घड़े में केवल मिट्टी ही व्याप्त है, उसी प्रकार इस जगत् में भी केवल ब्रह्म ही व्याप्त है, ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। श्री स्वामी जी ने साधकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि वे उस सर्वव्यापक दिव्य सत्ता के प्रति सतत एवं पूर्ण जागरूक रहते हुए साधनामय जीवन जियें और इसी जन्म में आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करें।

साधना सदन, हरिद्वार के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विश्वात्मानन्द पुरी जी महाराज ने आत्म-बोध की अनिर्वचनीय महिमा पर प्रवचन दिया। याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद का उद्धरण देते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि व्यक्ति धन-सम्पत्ति से नहीं, प्रत्युत केवल आत्मज्ञान के द्वारा ही अमरत्व अथवा मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। श्री स्वामी जी ने आत्म-बोध के पथ में आने वाली तीन बाधाओं, यथाद्वद्वमल, विक्षेप एवं आवरण का तथा उन्हें विजित करने के उपायों का भी वर्णन किया।

गीता विज्ञान पीठ, कनखल, हरिद्वार के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद प्रबोधन में भगवद्-शरणागति की महिमा बताते हुए कहा कि परमात्मा को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम एवं सर्वोपरि साधना है भगवान् के चरण-कमलों में अप्रतिबन्धित एवं सहज-सतत समर्पण कर देना। यदि हम ऐसी शरणागति कर देते हैं तो भगवान् हमारे जीवन का सारा योग-क्षेम सँभालते हुए अपनी अनन्त कृपा की वृष्टि कर देते हैं।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी भगवत्स्वरूप जी महाराज (दर्शनाचार्य), श्री गुरुमण्डल आश्रम, मायापुरी, हरिद्वार ने अपने उत्थापक उद्बोधन में साधक के जीवन में विवेक के महत्त्व पर बल दिया। श्रीमद्भागवत के कपिलोपदेश का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि आसक्ति अथवा राग ही बन्धन का कारण है; किन्तु यही आसक्ति यदि सन्तोन्मुखी, सत्संगोन्मुखी और तत्पश्चात् भगवतोन्मुखी कर दी जाये, तो मोक्ष-प्राप्ति सुलभ हो जाती है।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय ने अपने उद्घाटन-प्रवचन में साधना सप्ताह में भाग लेने वाले साधकों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि वे सब अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि परम पावन गुरुदेव के श्रीचरणों में आ कर सन्त-महात्माओं और विद्वज्जनों के सान्निध्य में बैठ कर उनके ज्ञानपरक उपदेशों को श्रवण करने का तथा उनकी शिक्षाओं को अपने सर्वोच्च भले के लिए उपयोग करने का स्वर्णिम दिव्य उपहार प्राप्त कर सके हैं। कठोपनिषद् से नचिकेता के कथा-प्रसंग को उद्धृत करते हुए श्री स्वामी जी ने प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष आने वाले दो मार्गों का वर्णन किया। प्रथमद्वद्व'प्रेयोमार्ग' वह पथ है जो सुखकर और इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने वाला है; किन्तु व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्कर में फँसाने के खतरे से भरा हुआ है। द्वितीयद्वद्व'श्रेयोमार्ग' है जो देखने में कठिन प्रतीत तो होता ही है, आरम्भ में सुखकर भी दिखायी नहीं देता; तथापि यह व्यक्ति को उसकी सर्वोच्च भलाई एवं

परम कल्याण की ओर ले जाने वाला है। पूज्य स्वामी जी महाराज ने साधकों को नचिकेता की भाँति बनने तथा ज्ञान-सम्पन्न श्रेयोमार्ग का अनुसरण करने का आदेश दिया।

उसी दिन के अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन में श्री स्वामी जी महाराज ने भक्त के जीवन में भगवान् की कृपा की महिमा का वर्णन किया। श्री स्वामी जी ने अपने निजी जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि प्रभु-कृपा ने उनके जीवन में कैसे अद्भुत चमत्कार किये। साधकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें सर्वशक्तिमान् परमात्मा के प्रति गहन प्रेम, भक्ति और विश्वास विकसित करना चाहिए।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय ने ब्राह्ममुहूर्त सत्रों की अपनी प्रवचन-शृंखला में साधना के विशद एवं विविध पहलुओं को स्पर्श करते हुए विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की। श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि इस संसार में पूर्णरूपेण दोष रहित एवं सम्पूर्ण कोई भी नहीं है और अपनी कमियों को खोज निकालने तथा उन्हें दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना, यही साधना है। सद्गुरुदेव के 'बीस महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक नियम', 'साधना-तत्त्व' एवं 'विश्व-प्रार्थना' का अनुसरण करने से हम अपनी दुर्बलताओं और अपने दोषों से ऊपर उठ सकते हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने प्रभु-नाम-स्मरण तथा सत्संग का महत्त्व बताते हुए रामायण में से उदाहरण दिये। साधकों को प्रेरणा देते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने भगवान् की विद्यमानता को निरन्तर अनुभव करते रहने, नाम-स्मरण करते रहने तथा सकारात्मक विचारों को पनपने देने के लिए कहा, जिससे कि आध्यात्मिक यात्रा में वे सुनिश्चित रूप से अति शीघ्र उन्नति कर सकें।

अन्य सत्रों में अपने प्रेरणाप्रद प्रवचनों में श्री स्वामी जी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता के महत्त्व का वर्णन करते हुए कहा कि यह एक माँ की भाँति हमें अपने जीवन के प्रत्येक पहलू के विषय में शिक्षा देती है तथा अपने आत्मोत्थापक एवं सशक्त विचारों द्वारा हमारे जीवन को सम्पोषित तथा संवर्धित करती है। श्री स्वामी जी महाराज ने साधकों को नित्य गीता का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, महासचिव, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय ने अपने ज्ञान-सम्पन्न प्रवचन में परमात्म-साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए मन की पवित्रता की अतिशय आवश्यकता पर बल दिया। श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि परमात्मा तो सदा, सर्वदा विद्यमान हैं, किन्तु हम अपने मन की मलिनताओं के कारण उनकी विद्यमानता को अनुभव कर पाने में असमर्थ हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण में से **'यदंघ्रि अभिध्यान समाधिधोतया धियानुपश्यन्ति तत्त्वं आत्मनः'** उद्धृत करते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि भगवान् के चरण-कमलों का अत्यन्त गहन श्रद्धाभक्तिपूर्वक सतत ध्यान करने से चित्त-शुद्धि हो जाती है अर्थात् मन समस्त इच्छाओं तथा विचारोंसे रहित हो जाता है। केवल तभी व्यक्ति आत्मा की वास्तविकता को जानने, समझने और अनुभव करने में समर्थ होता है।

योग की समन्वयता पर बल देते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि सभी विभिन्न साधनाओं का

एकमात्र सर्वोच्च लक्ष्य चित्त-शुद्धि है। हमारी आध्यात्मिक साधनाओं की उन्नति और उनका मूल्य हमारे आन्तरिक रूपान्तरण के आधार पर ही आँका जा सकता है। श्री स्वामी जी ने साधकों को अन्तर्निरीक्षण करने तथा यह जाँचते रहने के लिए कहा कि उनकी साधना उन्हें अन्तर्शुद्धि की ओर ले जा रही है या नहीं।

श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन के द्वारा साधकों के साधना-पथ पर चलते समय मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के सुगम एवं व्यावहारिक बिन्दुओं की चर्चा की। श्री स्वामी जी ने महाभारत में युधिष्ठिर तथा नेवले की कथा को सुनाते हुए भाव-शुद्धि के महत्त्व पर भी बल दिया।

श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में अत्यन्त सुन्दरता से वर्णन किया कि हमें परमात्म-साक्षात्कार के लिए क्यों प्रयत्नशील रहना चाहिए। श्री स्वामी जी ने कहा कि हम सभी परम आनन्द की प्राप्ति चाहते हैं, सर्व दुःखों की निवृत्ति तथा शाश्वत शान्ति चाहते हैं, जिन्हें यह 'सदा-परिवर्तनशील' तथा 'अनित्य सांसारिक वस्तु-पदार्थ' कदापि नहीं दे सकते। केवल परमात्मा का साक्षात्कार करने से ही इन तीनों को प्राप्त किया जा सकता है।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने अपने प्रबोधन में कहा कि यह जगत् भगवान् का ही प्रकटीकृत रूप होने के कारण परमात्मा के साक्षात्कार के पथ की बाधा नहीं है; किन्तु इसे आवश्यकता से अधिक अनावश्यक महत्त्व देना तथा लौकिक सुखों में ही सुख-भोग की इच्छा रखना समस्त दुःखों का कारण है। हमें संसार से कुछ भी प्रत्युपकार की कामना न करते हुए इसकी सेवा करनी होगी। इस प्रकार संसार के प्रति सम्यक् दृष्टि और सम्यक् व्यवहार बनाये रखने से मैं और मेरा पन को दूर करने तथा वैराग्य की भावना को विकसित करने में सहायता मिलेगी। ऐसा करने से ही भगवान् के चरण-कमलों में शरणागति सम्भव हो पायेगी और हमारे जीवन में ईश-कृपा की वृष्टि होने लगेगी।

श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने गुरुदेव के दिव्य जीवन सम्बन्धी सिद्धान्तोंह्नार प्रेरणाप्रद प्रवचन देते हुए कहा कि ईश्वरोन्मुखी जीवन ही दिव्य जीवन है जिसके अन्तर्गत छह सोपान समाविष्ट हैंह्वह्लसेवा, भक्ति, दान, पवित्रता, ध्यान और साक्षात्कार। शाश्वत शान्ति तथा परम आनन्द की प्राप्ति केवल दिव्य जीवन जीने से की जा सकती है।

श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में साधकों की अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति भ्रान्तिपूर्ण धारणा की ओर तथा नाम-रूप के अवास्तविक व्यक्तित्व को ही वास्तविक मान लेने के मूलभूत दोष की ओर सुस्पष्ट रूप से ध्यान आकर्षित किया। श्री स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति इस भ्रम का शिकार है कि वह तो संसार का विशेष व्यक्ति है और अन्य सब उसके सुख-साधन हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि वह एक असुरक्षा, भय और दुःखद भावना से पूर्ण जीवन जीता है। श्री स्वामी जी ने साधकों को इस भ्रान्तिपूर्ण विचार से चिपटे रहने को छोड़ कर अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित रहने के लिए प्रयत्नशील होने का उपदेश दिया।

श्री स्वामी सेवानन्द जी महाराज ने अपने शक्तिशाली प्रवचन में साधकों को प्रेरित करते हुए

स्मरण दिलाया कि आत्म-साक्षात्कार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वामी जी ने साधकों को सद्गुरुदेव के बताये बीस आध्यात्मिक नियमों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि यह नियम आध्यात्मिक जीवन की नींव हैं। स्वामी जी ने सदैव मृत्यु का स्मरण रखने तथा अपने कर्तव्यों का पालन करते रहने का भी उपदेश दिया।

श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज ने भगवान् की सर्वव्यापकता पर बल देते हुए, अपने प्रवचन में साधकों को जप, ध्यान, स्वाध्याय तथा नित्य श्री विष्णुसहस्रनाम का पारायण करते हुए अपने चित्त की शुद्धि करने के लिए प्रेरणा दी।

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में इसी जन्म में भगवद्-साक्षात्कार करने के लिए परम पावन गुरुदेव द्वारा दिये गये तीन सूत्रों का वर्णन किया। ये सूत्र हैं : भगवान् का सतत स्मरण, द्वितीयह्नह्वदुर्गुणों का त्याग एवं सद्गुणों का उपार्जन तथा तृतीय है अपने समस्त कर्मों का आध्यात्मीकरण।

श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में ईश्वर के प्रति भक्ति की महिमा के सम्बन्ध में बताया तथा इसके लिए महान् सन्त-महात्माओं के जीवन-चरित में से रुचिकर एवं प्रेरक प्रसंगों की चर्चा की।

श्री स्वामी पूर्णबोधानन्द जी महाराज ने अपने उद्बोधन में ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में तीन सकारात्मक प्रमाणों की चर्चा करते हुए बतायाह्नह्वप्रथम यह कि हम किसी कार्य से उसके कारण का अनुमान लगाते हैं। अतः यह अनुमानसिद्ध प्रमाण है कि यह सृष्टि है तो इसकी रचना करने वाला भी कोई-न-कोई अवश्य होगा। द्वितीय यह कि शास्त्र, गुरु तथा भगवत्साक्षात्कार-प्राप्त सन्तों की उद्घोषणा है कि परमात्मा है। और श्रद्धा तथा विश्वास की पराकाष्ठा के द्वारा परमात्मानुभूति हो जाना तृतीय प्रमाण हो जाता है।

श्री स्वामी ब्रह्मात्मानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में गुरु की अनन्त महिमा का वर्णन किया। श्री स्वामी जी ने कहा कि पारसमणि तो अपने से स्पर्श होने वाले लोहे को स्वर्ण में परिवर्तित करती है, लेकिन उसे पारस नहीं बनाती; किन्तु गुरु तो कृपा करके अपने शिष्य को अपना स्वरूप ही प्रदान कर देते हैं।

श्री स्वामी निराकारानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में ईशावास्योपनिषद् के प्रथम श्लोक की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि इस श्लोक में समस्त वेदों तथा शास्त्रों का सार निहित है तथा इस श्लोक में प्रतिपादित सत्य के आधार पर यदि हम अपना जीवन ढाल सकें, तो इसी जन्म में परमात्मा से साक्षात्कार के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री स्वामी भक्तिप्रियानन्द माता जी का प्रवचन गुरु एवं भगवान् के ऐक्य पर संकेन्द्रित था। उन्होंने परम आराध्य गुरुमहाराज, श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रति अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति से परिपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए भगवान् श्री कृष्ण की रहस्यमयी एवं अद्भुत लीलाओं के साथ, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन-चरित में से घटनाएँ ले कर परस्पर समानता व्यक्त की।

ब्रह्मचारी श्री गोपी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि हम सब वास्तव में सत् चित् आनन्द आत्मा हैं; किन्तु अज्ञान के आवरण के कारण इसका अनुभव नहीं कर पाते। उन्होंने साधकों को सदा दो अस्त्रों से स्वयं को कवचित रखने के लिए प्रेरित करते हुए कहा

कि उन्हें इस सतर्कता की मशाल तथा वैराग्य की तलवार धारण करके ही आध्यात्मिक पथ पर आरूढ़ होना चाहिए।

प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने अपने उद्बोधन में जीवन का निर्माण करने वाले दो महत्त्वपूर्ण तत्त्वों के महत्त्व पर बल दियाह्लप्रथम 'समय' तथा द्वितीय 'शक्ति'। उन्होंने साधकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि साधकों को सावधान रहना चाहिए कि भगवान् के पथ पर अग्रसर होने के लिए वे अपने इस मिले हुए 'समय' के एक-एक क्षण का तथा ईश्वर-प्रदत्त इस 'शक्ति' के प्रत्येक अंश का सदुपयोग करें, इन्हें व्यर्थ न जाने दें।

श्री हरिहर सिंह जी का प्रवचन श्री रामचरितमानस के दो महिमामयी चरित्रोंह्लवीर हनुमान् एवं भरत पर केन्द्रित था। परम गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी द्वारा प्रशंसित निःस्वार्थ सेवा और प्रेम के ये दोनों जीवन्त एवं साकार उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि श्री हनुमान् जी ने निःस्वार्थ सेवा के द्वारा तथा भरत ने प्रभु-प्रेम द्वारा भगवद्-प्राप्ति की।

प्रोफेसर ह्रुदानन्द राय जी ने अपने प्रवचन में जीवनी-शक्ति के सम्बन्ध में तथा एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिए इस शक्ति के उचित प्रणालन के सम्बन्ध में भारतीय एवं पश्चिमी दार्शनिकों के विचारों का अत्यन्त विषद रूप से वर्णन किया। श्री राय ने कहा कि जीवनी-शक्ति सदैव उद्देश्यविहीन एवं विराम-रहित अर्थात् चंचल होती है। पश्चिमी विचारधारा के अनुसार, परिपूर्ण जीवन चार तत्त्वों का परस्पर सुसंगत संयोजन है। ये चार तत्त्व हैंह्लह्लकर्म, खेल, प्रेम और प्रार्थना। भारतीय दर्शनशास्त्र चार पुरुषार्थों का वर्णन करता हैह्लह्लधर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, जिनकी पूर्ति का हर व्यक्ति को प्रयत्न करना चाहिए।

प्रोफेसर एम. एन. रस्तोगी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत प्रवृत्ति तथा आकांक्षा परम ज्ञान, परम आनन्द तथा शाश्वतता प्राप्त करने की ही होती है और इस आकांक्षा की पूर्ति केवल ईश्वर-साक्षात्कार के द्वारा ही हो सकती है। उन्होंने साधकों को साधना के चार मार्गों के सम्बन्ध में भी बतायाह्लह्लयथा ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग तथा राजयोग।

प्रवचनों के अतिरिक्त तीन सत्र प्रश्नोत्तरों के भी रखे गये थे, जिनमें साधकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज द्वारा दिये गये।

सप्तम दिवस समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने विदाई समारोह में साधकों को आशीर्वचन दिये। प्रसाद तथा ज्ञान-प्रसाद वितरण के साथ साधना सप्ताह सम्पूर्ण हुआ।

साधना सप्ताह के सातों दिन रात्रि सत्संग में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सोने पर सुहागे का काम किया। प्रथम एवं द्वितीय दिन क्रमशः श्री सूर्यनारायण राव तथा श्री विजयेन्द्र वर्मा जी ने सुमधुर स्वरों में भजन प्रस्तुत किये। तृतीय दिवस द डिवाइन लाइफ सोसायटी की राजकोट शाखा के भक्तों ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन पर आधारित अत्यन्त प्रेरणाप्रद, हृदयस्पर्शी तथा आत्मोत्थापक

नाटक प्रस्तुत किया। श्रीमती रश्मि देवी तथा श्री एम. आर. तिलकराम जी (स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश निवासी) ने चतुर्थ दिवस भजनों और नृत्य का अद्भुत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। 'टैम्पल ऑफ फाइन आर्ट्स, कोयम्बतूर' के कलाकारों द्वारा सप्ताह के पाँचवें दिन भजन एवं नृत्य का अत्यन्त विलक्षण, मनोहर एवं मर्मस्पर्शी कार्यक्रम रखा गया। छठे और सातवें दिन 'श्री कांची कामकोटि नाट्यालय, चेन्नै' द्वारा अत्यन्त उत्कृष्ट रामायण नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गयी।

४ अगस्त २०१० को मुख्यालय आश्रम में परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की ४७ वीं पुण्यतिथि आराधना का कार्यक्रम समुचित श्रद्धा-भक्ति और पवित्रता से विधिवत् सम्पन्न किया गया।

ब्राह्ममुहूर्त में प्रातः ४.३० बजे कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रार्थना एवं ध्यान से किया गया। तदुपरान्त द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने उद्बोधन में भक्तों पर सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आशीर्वाद का आह्वान करते हुए उन्हें गुरुदेव की 'विश्व-प्रार्थना' के अनुरूप जीवन यापन करने के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा दी।

श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन द्वारा गुरुदेव के उपदेशों को स्मरण रखने तथा उनकी शिक्षाओं में उनकी जीवन्त विद्यमानता को अनुभव करते हुए, अनुसरण करने की प्रेरणा दी। उसके उपरान्त भारी संख्या में भक्तों द्वारा अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति एवं उत्साहपूर्वक भजन-कीर्तन करते हुए 'प्रभातफेरी' निकाली गयी। यज्ञशाला में विश्व-शान्ति एवं मानव-कल्याण हेतु विशेष हवन किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में समाधि मन्दिर में विशेष पूजा तथा शिवानन्द सत्संग भवन में सद्गुरुदेव की परम पावन पादुकाओं की लक्षार्चना सहित महापूजा समर्पित की गयी। समस्त वातावरण श्रद्धा-भक्ति एवं प्रार्थनापूर्ण भावनाओं से ओत-प्रोत था। द डिवाइन लाइफ सोसायटी के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने श्री गुरुदेव को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि गुरुदेव सदैव आनन्दपूर्ण अवस्था में रहते थे, अतः उनके दिव्य सान्निध्य में सदा प्रसन्नता और शान्ति सर्वत्र व्याप्त रहती थी। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज (महासचिव, द डिवाइन लाइफ सोसायटी) ने अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन में सन्त-महात्माओं की शाश्वत विद्यमानता होने पर बल दिया। अपराह्न सत्र में गुरुदेव के जीवन-चरित एवं शिक्षाओं पर प्रवचन हुए।

सायंकाल में श्री गुरुदेव की मधुर स्मृति में माँ गंगा की विशेष पूजा-आरती श्री विश्वनाथ घाट पर की गयी। रात्रि के सत्संग में दैनिक स्तोत्र-पाठ एवं प्रार्थना के अतिरिक्त श्रीमती अर्चना (हरिद्वार) तथा सुश्री सुशीला काम्बोज माता जी (देहरादून) के द्वारा अत्यन्त समधुर एवं मर्मस्पर्शी भजन प्रस्तुत किये गये। तदुपरान्त भक्तों को वीडियो द्वारा सद्गुरुदेव के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आरती और प्रसाद-वितरण के साथ महोत्सव का कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा परम पावन सद्गुरुदेव के शुभ आशीर्वाद सभी पर हों!

* * *

बाल-स्तम्भ :

एक-दूसरे से बढ़ कर ३

स्वामी रामराज्यम्

(उत्तराखण्ड के एक गाँव में बनी भाई-बहन की दो समाधियों की कहानी सुनाते हुए उसी गाँव के निवासी रामप्रसाद ने बताया कि बदरीनाथ से लौटती हुई एक बस अलकनन्दा नदी में गिर कर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थी। उस बस के एक यात्री राजू की पत्नी उसके देखते-देखते नदी के जल में समा गयी। उसी दुर्घटना में अपने दादा-दादी को खो कर अपने को डूबने से बचाने का प्रयास करती हुई तेरह-चौदह वर्ष की लक्ष्मी को राजू ने बचा लिया। अपने-अपने परिजनों को खो कर राजू और लक्ष्मी दोनों ही अकेले रह गये। राजू लक्ष्मी के गाँव में उसके साथ उसका भाई बन कर रहने लगा। कुछ वर्षों बाद उस गाँव में हुए एक अग्निकाण्ड में एक बूढ़े व्यक्ति को बचाने के विफल प्रयास में लक्ष्मी अपने प्राण गँवा बैठी। बेहद दुःखी राजू ने उसकी स्मृति में एक समाधि बनवा दी।)

एक दिन वह मेरे पास आ कर बैठ गया। कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा रहा। मैं चाहता था कि वह कुछ बोले, हँसे। मैंने कहाह्न'राजू, आज मुझे तुमसे लक्ष्मी के बारे में बहुत-कुछ सुनने का मन हो रहा है। कुछ बताओ न उसकी बातें।'

वह बोलाह्न'हाँ दादा, मैं बतलाऊँगा। शायद मेरा मन कुछ हलका हो जाये। लक्ष्मी साधारण लड़की नहीं थी। उसके अन्दर उसके महान् पुरखों का खून बहता था। एक दिन उसने मुझे अपने परदादा और परदादी की कहानी सुनायी थी। वे मध्य प्रदेश के एक गाँव में रहा करते थे। उसके परदादा ने एक बार अपने ही खिलाफ मुकदमा लड़ने वाले एक किसान के वकील के पास जा कर पैरवी करने का खर्चा दिया था। आज भी उस गाँव के लोग उस घटना की याद करते हैं। उसकी परदादी भी एक बेजोड़ महिला थीं। उनके पड़ोस में रहने वाले परिवार में एक पागल युवक रहता था। उसका पागलपन इतना बढ़ गया था कि लोगों को उससे डर लगने लगा था। एक दिन परदादी गाँव के बाहर बने कुएँ पर पानी भरने गयीं। उनके साथ उनकी पाँच-छः साल की बच्ची भी थी। बच्ची को कुएँ से थोड़ी दूरी पर बिठा कर और गगरी बच्ची के पास छोड़ कर वह सामने के खेत में काम कर रही एक महिला के पास कोई जरूरी बात करने के लिए चली गयीं। इस बीच वह पागल आ गया। उसने एक हाथ से गगरी उठायी और दूसरे हाथ से बच्ची। फिर दोनों को कुएँ के अन्दर डाल कर वह भागा। उधर से गुजरने वाले राहगीर यह देख कर चिल्लाने लगे। कुछ लोग उसे पकड़ने के लिए भागे। परदादी दौड़ कर कुएँ पर आयीं। बच्ची को कुएँ से बाहर निकालते-निकालते उसकी जीवन-लीला समाप्त हो चुकी थी। परदादी रोती-बिलखती घर की ओर भागीं। पीछे-पीछे लोग उस पागल को पकड़ कर उनके घर ले आये और उसे पीटने लगे। परदादी अपने आँसू पोंछ कर दौड़ती हुई पागल के पास पहुँचीं और उसे

खींच कर एक ओर खड़ा कर दिया। बोलींह्नह्न'तुम लोग किसे मार रहे हो? उसे होश ही कहाँ है? उसे मार कर बच्ची को भगवान् के घर से वापस ले आओगे क्या?' उन्होंने न पागल से कुछ कहा और न उसके माँ-बाप से। उसी महीने उन्होंने अपने घर पर रामायण की कथा करवायी। जब तक कथा होती रही, परदादा और परदादी दोनों उस पागल को बुला कर ले आते थे और उसे एक आसन पर बिठा कर स्वयं उसके पास बैठ कर कथा सुनते थे। यह कहानी सुनाने के बाद लक्ष्मी ने मुझसे कहा था कि लगता है कि मेरे परदादा-परदादी की आत्मायें अन्दर से मुझे झकझोरा करती हैं और कहती हैंह्नह्नअपना और दूसरों का एक ही परिवार है, उसके लिए सोचा कर। तेरी फिक्र भगवान् करेंगे। दादा, लक्ष्मी सच ही कहती थी, नहीं तो भला सत्रह-अठारह साल की उमर में वह लड़की किसी की जान बचाने के लिए आग में कूद सकती थी?' मैंने कहाह्नह्न'राजू, तू कितना भाग्यशाली है! लक्ष्मी-जैसी बहन सबको नहीं मिल पाती।' राजू की आँखों में आँसू आ गये। कुछ देर तक वह बैठा रहा, फिर आँसू पोंछता हुआ उठ खड़ा हुआ और चला गया।

एक दिन राजू घबड़ाया हुआ मेरे पास आया। बोलाह्नह्न'मैंने अभी-अभी रेडियो से सुना कि पीपलकोटी में बाढ़ आ गयी। पूरा-का-पूरा गाँव पानी में डूब गया। वहाँ पुल पर एक कार खड़ी थी। उसमें एक परिवार बैठा था। उस परिवार के समेत वह कार भी पानी में बह कर डूब गयी। गाँववाले पहाड़ पर चढ़ कर पेड़ों के नीचे शरण लिये हुए हैं। हाय, इस ठण्ढक में उनका क्या हाल होगा! दादा, मैं वहाँ जाऊँगा। जो-कुछ बन पड़ेगा, वह करूँगा।' मैंने दुकान से नोटों की एक गड्डी निकाल कर उसे पकड़ायी और कहाह्नह्न'इस पैसे को जरूरतमन्द लोगों पर खर्च कर देना। जाओ, भगवान् तुम्हारा भला करें, सबका भला करें।' राजू चला गया। फिर उसका कोई समाचार नहीं मिला। यह सुनने को जरूर मिला कि जैसे-जैसे पानी कम होता जा रहा है, लोग पहाड़ से नीचे उतर रहे हैं।

दस-पन्द्रह दिनों बाद राजू वापस आ गया। महीनों से जिस राजू ने हँसना छोड़ दिया था, उसके चेहरे पर खुशी थी। मैंने पूछाह्नह्न'कब लौटे?' उसने कहाह्नह्न''आज दोपहर की बस से। अब लोग अपने-अपने घरों में वापस लौट गये हैं। पानी उतर गया है। आधे घर गिर गये हैं। बचे हुए घरों में न अनाज है, न कपड़ाह्नह्नकुछ भी नहीं है। चारों ओर भुखमरी की हालत है। मैंने तुम्हारे पैसे से अनाज और कम्बल खरीद-खरीद कर बाँट दिये। छः-सात लोगों को अपने साथ ले आया हूँ। ये लोग पहले से ही पेट काट कर जिन्दगी गुजार रहे थे। अब तो इनके पास कुछ भी नहीं बचा है। चलूँ, इनके लिए खाने-पीने का इन्तजाम करूँ।' घण्टे-आध घण्टे बाद मैं भी उसके घर पहुँचा। वह एक बड़े-से पतीले में दलिया पका रहा था। मुझे देख कर बोलाह्नह्न'जो-कुछ रूखा-सूखा मेरे पास है, वह इन्हें खिलाऊँगा। जैसी बन पड़ेगी, वैसी सेवा कर दूँगा इनकी। जब इनके गाँव में पानी बिलकुल सूख जायेगा, तब इन्हें भेज दूँगा।' उस समय राजू के चेहरे का भाव देखते ही बनता था। जिस प्रकार कोई अपने प्रिय मेहमानों का सत्कार करता है, उसी प्रकार उसने सबके हाथ-पैर

धुलाये। उन्हें एक कतार में बैठा कर उनके सामने पत्तल रखे। फिर दलिया परोस कर हाथ जोड़ कर बोलाह्नह्न'खाओ भगवान्, खाओ।' वह दौड़-दौड़ कर परोसता रहा। मैं राजू के प्रसन्न चेहरे को बार-बार देख रहा था। मैं बोलाह्नह्न'राजू, शाबाश। यह जोश बनाये रखना।' राजू ने कहाह्नह्न'यह मेरा जोश नहीं है। लक्ष्मी ने अपना जोश मेरे अन्दर भर दिया है। भगवान् के धाम में बैठी हुई वह इन लोगों को इस घर में देख कर आज कितना खुश हो रही होगी!' करीब एक सप्ताह तक राजू ने उन भगवानों को अपने पास रखा। फिर उन्हें बस से वापस पीपलकोटी भेज दिया। राजू फिर उदास रहने लगा। एक दिन मैंने उससे पूछाह्नह्न'राजू, यह फिर क्या हो गया है तुम्हें?' वह बोलाह्नह्न'जब तक दूसरों के लिए कुछ करने को मिलता है, लक्ष्मी की याद आ कर गुदगुदाती रहती है। जब जिन्दगी अपने में सिमट जाती है, तब फिर उदासी छा जाती है।'

(क्रमशः)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

शिवानन्द होम द्वारा सेवा

'शिवानन्द होम ऐसे लोगों, जो सड़क के किनारे निरावलम्ब तथा मरणासन्न स्थिति में पाये जाते हैं और जिनकी देखभाल रखने वाला कोई नहीं होता, को चिकित्सीय सुविधा तथा स्नहेमय देखभाल की उपलब्धि कराता है।'' (स्वामी चिदानन्द)

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने स्वयं इस सेवा का प्रारम्भ कर, अपने अद्वितीय, एकनिष्ठ तथा अप्रतिम प्रेम को कार्य का मूर्तिमन्त रूप देते हुए एक जीवन्त और प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस महीने में, ढालवाला कुष्ठरोगियों की संस्था से वयोवृद्ध कुष्ठरोगियों के मरीजों में से, लगभग ८० वर्ष की आयु की एक माता वर्षा में फिसल जाने के पश्चात्, उनके नितम्ब-अस्थिभंग के कारण होम में लायी गयीं। उनकी भुरभुरी अस्थियों युक्त सुकुमार काया शय्याग्रस्त हो कर दैनन्दिन आवश्यकताओं हेतु अन्य पर अवलम्बित थी। आज पर्यन्त निज कुटीर में स्वावलम्बी रहने के पश्चात् इस पराधीन अवस्था का स्वीकार उनके लिए कितना दुष्कर था! किन्तु साहस और धैर्यपूर्वक, वे ये दर्द, असुविधा-कष्ट सहन करती हैं तथा जो कोई उसका अभिवादन करने अथवा सहाय हेतु आते हैं, उनको धन्यवाद देती हैं। इस माह, उसी संस्था में से अन्य एक स्त्री-मरीज भरती की गयी थी, जिसकी एक स्थानिक अस्पताल में स्त्री-रोग विषयक शल्यक्रिया सम्पन्न हुई थी और अब 'होम' में उत्तर-शल्यक्रियाह्वपरिचर्या से स्वास्थ्यलाभ कर रही थी।

एक सद्गृहस्थ सड़क पर से लाये गये जहाँ वे चारों ओर इधर-उधर घूमते पाये गये। वे एक स्नेहपूर्ण व्यक्ति, जो उनके समीप आने वाले हर किसी का अभिवादन करते हैं : ''नमस्ते! नमस्ते!'' वाणी थोड़ी अस्पष्ट उच्चारण युक्त, झुकी हुईह्वह्ववक्र कमरयुक्त बाह्य रूप, लड़खड़ाती चाल। कीटाणुओं से ग्रस्त उदर तथा मन्दबुद्धिह्वह्वयह उनकी स्थिति! निज विपत्तियों को अभिव्यक्त नहीं कर सकते, निज व्यथा वे कह नहीं सकते, निज निर्गम-निकास कार्यों पर वे नियन्त्रण नहीं रख सकते । किन्तु कितने महान् वरदान की उन्हें प्राप्ति है : 'सन्तुष्ट रहना, प्रातःकाल की जागृति से ही प्रसन्न रहना तथा जीवन को सहज ही, स्वभावतः ही व्यतीत होने देना। उन्हें मन्दबुद्धि की दृष्टि से देखा जायेगा; किन्तु उसी समय उनका हृदय उत्तम, सुन्दर गुणों से विकसित होगा और अन्तर की गहनता से निःसृत, परमात्मा की आवाज को समर्पित होने का रहस्य वे निश्चित ही जानते होंगे।

''हे प्रभु! मुझे अपनाने आप मेरी ओर झुकते हैं, आपकी
प्रेम डोरी से बँधे हो कर भी,
उस प्रेम-बन्धन से सरक कर, साक्षात् स्वर्गद्वार से में
अभागी पलायन करता हूँ।
किन्तु जब निरवलम्ब, परित्यक्त मैं गिरने लगता हूँ,
''पीछे मुड़के देखो, स्मरण रहे,'' आप पुकारते हैं, ''मैं
अब भी,
आपसे बना रहा हूँ, आपका स्वीकार कर रहा हूँ।''

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ***स्वामी शिवानन्द***

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

जून, जुलाई और अगस्त मास की अवधि में डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

स्वामी जी महाराज २७ से ३० जून तक 'स्वामी शिवानन्द सैन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल, खण्डगिरि (भुवनेश्वर)' पधारे। वहाँ उन्होंने कुछ कक्षाएँ देखीं। २९ को स्वामी जी ने विगत शिक्षा-वर्ष में अध्यापकों को 'उत्तम-कार्य प्रदर्शन' के लिए सम्मानित किये जाने के लिए होने वाली सभा में भाग लिया तथा ३० को विद्यालय के स्थापना दिवस समारोह में भी सम्मिलित हुए। आगामी दिवस स्वामी जी महाराज ने 'हाउस मास्टरों' से तथा शिक्षक-वर्ग के अतिरिक्त अन्य कर्मचारियों से भी अलग से मिल कर बातचीत की।

१ से ५ जुलाई तक श्री स्वामी जी डी. एल. एस. के ही एक अंग, चिदानन्द तपोवन शान्ति आश्रम, बालिगुआली गये तथा वहाँ की विभिन्न गतिविधियों का निरीक्षण किया। वहाँ की कतिपय गम्भीर समस्याओं को सुलझाने के लिए कुछ कदम भी उठाये गये जिससे अन्ततः वह सुलझ गयीं।

डी. एल. एस. की बलंगीर शाखा के भवन, जिसको 'शिवानन्द आश्रम' नाम दिया गया है, के निर्माण का कार्य सम्पूर्ण होने पर शाखा ने श्री स्वामी जी महाराज से उसका उद्घाटन-कार्य सम्पन्न करने की प्रार्थना की थी। इसी सम्बन्ध में श्री स्वामी जी ७ से १० जुलाई तक वहाँ गये। ७ जुलाई को यज्ञ के लिए अधिवास तथा कलश-स्थापना का कार्यक्रम था, जिसमें श्री स्वामी जी महाराज सम्मिलित हुए। ८ को समस्त शुभ मांगलिक कार्यों का शुभारम्भ श्री स्वामी जी ने किया। सायंकालीन सत्संग में अन्य सन्तों सहित श्री स्वामी जी महाराज भी सम्मिलित हुए तथा प्रवचन भी दिया। ९ को भवन के भीतर परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तथा परमाराध्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की मूर्ति-स्थापना का शुभकार्य भी श्री स्वामी जी महाराज ने सम्पन्न किया। श्री स्वामी जी महाराज ने 'शिवानन्द आश्रम' का उद्घाटन किया तथा उसी दिन 'चिदानन्द कॉम्यूनिटी (हैल्थ) सेंटर' का शुभारम्भ भी किया। सन्ध्या-समय शाखा द्वारा आयोजित सार्वजनिक सत्संग में भी स्वामी जी महाराज सम्मिलित हुए तथा प्रवचन दिया। १० को केवल शाखा के भक्तों के लिए सत्संग रखा गया था, उसमें स्वामी जी ने भाग लेते हुए गुरुदेव की शिक्षाओं पर प्रवचन दिया।

इस 'हैल्थ सेंटर' के माध्यम से शाखा जन-साधारण हेतु सप्ताह के सभी दिन चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराने की योजना बना रही है। साथ ही भिन्न-भिन्न दिनों में होमियोपैथी चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा, नेत्ररोग चिकित्सा, प्रकृति निर्णय, बालरोग चिकित्सा इत्यादि प्रारम्भ करने के लिए भी वह प्रयत्नशील है। यह सब अति उत्तम सेवा है। शाखा का भवन भी अत्यन्त सुन्दर और विस्तृत है, जिसके द्वारा शाखा के विविध सेवा-कार्य सम्पन्न होने की सुविधा रहेगी।

दिनांक ८ को 'विश्वात्मा चेतना परिषद्' के श्रद्धेय श्री स्वामी सत्यप्रज्ञानन्द जी महाराज के निमन्त्रण पर स्वामी जी उनके द्वारा संचालित

'विश्वात्मा विद्या मन्दिर' गये तथा विद्यार्थियों से भेंट की एवं प्रवचन भी दिया। बलंगीर में स्वामी जी परम पूज्य बाबा चैतन्यचरणदास जी महाराज के 'भागवत भवन' तथा 'बिहार योग विद्यालय, मुंगेर' द्वारा संचालित 'सत्यानन्द योग विद्यालय' भी गये।

'जन कल्याण शिक्षा समिति, दिल्ली' द्वारा १९८६ से 'संकल्प' नाम से एक परियोजना का संचालन किया जा रहा है।' 'संकल्प' युवा-वर्ग को 'ऑल इन्डिया सिविल सर्विसेज़' की परीक्षा की तैयारी के लिए निर्देशन दे रही है। यह लिखित परीक्षा पत्रों एवं प्रत्यक्ष साक्षात्कार (इन्टरव्यू) दोनों के लिए ही तैयारी करवाती है। यह लगभग समाज-कल्याण अथवा सेवा-भाव के रूप में की जाने वाली योजना है जिसमें शुल्क बहुत ही कम रखा गया है। वर्षों से इसके परिणाम भी अति उत्तम आ रहे हैं तथा 'सिविल सर्विसेज़' की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों में बड़ी संख्या में 'संकल्प' के विद्यार्थी होते आ रहे हैं। वर्ष २०१० की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले ८७५ विद्यार्थियों में से ४४४ अर्थात् ५० प्रतिशत से भी अधिक 'संकल्प' के विद्यार्थी थे। इनमें से १२४ आई. ए. एस., आई. पी. एस. तथा आई. एफ. एस. के लिए सफलता प्राप्त करने वाले थे, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

'संकल्प' ने श्री स्वामी जी महाराज को १८ जुलाई को, सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के 'बधाई समारोह' में विद्यार्थियों को सम्बोधित करने के लिए आमन्त्रित किया था। हंसराज कालेज, दिल्ली के ऑडिटोरियम में यह कार्यक्रम था। आदरणीय श्री जगमोहन जी इसमें अध्यक्ष पद पर थे तथा अन्य बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे। स्वामी जी महाराज ने कार्यक्रम में भाग लेते हुए चयनित विद्यार्थियों को भारत के सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर तथा आदर्श प्रबन्धक बनने के मार्ग पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन दिया।

२७ जुलाई को श्री स्वामी जी महाराज 'शिवानन्द हाई स्कूल, भुवनेश्वर' की प्रबन्धक समिति की वार्षिक गोष्ठी में, अध्यक्ष होने के नाते सम्मिलित हुए। इस विद्यालय के वर्षों से शैक्षिक परिणाम अत्यन्त सराहनीय रहे हैं तथा बोर्ड की परीक्षाओं में अधिकांश विद्यार्थी प्रथम या द्वितीय श्रेणी में सफलता प्राप्त करते आ रहे हैं। इस वर्ष २०१० की परीक्षा में बैठने वाले ५१ विद्यार्थियों में से ४१ प्रथम श्रेणी में तथा शेष १० द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए जो कि अत्यन्त श्लाघ्य है। इस शैक्षिक वर्ष में विद्यार्थियों की कुल संख्या से एक तिहाई की और वृद्धि हो गयी है और अब कुल संख्या ४०० से भी अधिक हो चुकी है। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने आवास-काल में विद्यालय के प्रबन्धकों से तथा प्रबन्धक समिति से भी बढ़ती हुई संख्या के लिए आवश्यक प्रबन्धन सम्बन्धी विस्तार में बातचीत की तथा आवश्यक कदम उठाने के सम्बन्ध में भी निर्णय लिये।

३० जुलाई से ४ अगस्त तक श्री स्वामी जी महाराज पुनः चिदानन्द तपोवन शान्ति आश्रम, बालिगुआली गये। इस आवास-काल में श्री स्वामी जी महाराज ने आश्रम के आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को देखा।

४ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि आराधना के कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए तथा अपराह्न एवं पूर्वाह्न के दोनों सत्संगों में प्रवचन दिये। बालिगुआली और भुवनेश्वर, दोनों स्थानों पर श्री स्वामी जी महाराज से विभिन्न शाखाओं के प्रतिनिधियों ने भेंट की।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): शाखा ने माह जुलाई, २०१० में प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग महामृत्युंजय मन्त्र के साथ, प्रति मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा के पाठ, श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजन, भजन-कीर्तन तथा दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सेवाएँ सम्पन्न कीं।

बड़कुआँल (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ दैनिक प्रभात-सायंकाल की पूजाएँ और स्वाध्याय तथा स्तोत्रपाठ, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन को विशेष पादुका-पूजन। विशेष गतिविधियाँ (१) श्री गुरु-पूर्णिमा उत्सव : ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-सभा, पूज्य गुरुदेव के 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र सहित सहस्रार्चना, गीता-पारायण, १ घण्टा पूज्य गुरुदेव के मन्त्र 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' का कीर्तन, सान्ध्य-सत्संग। (२) १० दिवसीय साधना-सत्र। (३) 'महाविषुवा' संक्रान्ति : आध्यात्मिक कार्यक्रम।

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): शाखा के लिए 'श्री गुरु-पूर्णिमा' एक विशेष उत्सव होने से समीपवर्ती अनेक ग्रामों के ३०० भक्त कार्यक्रमों में शामिल हुए। ब्राह्ममुहूर्तीय सभा से प्रारम्भ हो कर, रात्रि को भव्य आरती से समापन होने वाले कार्यक्रमों में गुरुदेव-मन्त्र के जप सहित लक्षार्चना, गीता-स्वाध्याय, श्रीमद् भागवतम् का स्वाध्याय, प्रवचन, २ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन, भजन-कीर्तन, सब भक्तों को अन्न-प्रसाद तथा निर्धनों को अन्न, वस्त्र और दक्षिणा का प्रदान आदि समाविष्ट थे।

बलांगीर (उड़ीसा): शाखा ने, दिनांक ८ जुलाई से दिनांक १० जुलाई के ३ दिवसीय विशेष कार्यक्रमों का 'शिवानन्द-आश्रम' का उद्घाटन, हमारे दो गुरुओं की और भगवान् धन्वन्तरि की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा तथा 'चिदानन्द आरोग्य केन्द्र' के उद्घाटन समाविष्ट थे। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज के पावन करकमलों द्वारा ये कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रासंगिक प्रवचनकार थे : परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, सत्यानन्द योगाश्रम के आदरणीय श्री स्वामी तेजोमयानन्द जी, विश्व चेतना परिषद् के आदरणीय श्री स्वामी सत्यप्रज्ञानानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी, अन्य आध्यात्मिक आश्रमों के दो आदरणीय वक्ता और शाखा के पदासीन भक्त। सुप्रसिद्ध और लब्ध-प्रतिष्ठ कलाकारों द्वारा भजन-प्रस्तुति हुई। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ के भक्तों की शंकाएँ दूर कीं और और गुरुदेव के उपदेशों पर प्रवचन भी किया कुष्ठरोगियों की तीन संस्थाओं में एवं चार अनाथालयों में अन्न-प्रसाद वितरित हुआ।

बरबिल् (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति सोमवार को भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग और चिदानन्द-दिन को साधना-दिन आदि नियमित गतिविधियों के आधिक्य में, माहावधि में, 'शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथी औषधालय ने ४१५ मरीजों के इलाज किये।

बरगढ़ (उड़ीसा): शाखा की दैनिक गतिविधियों के आधिक्य में, शनिवार, गुरुवार तथा रविवार के साप्ताहिक विविध कार्यक्रम नियमित सम्पन्न हुए। 'श्री गुरु-पूर्णिमा' का पावन दिन 'विशेष साधना दिन' था जो पादुका-पूजन, स्थानिक आदरणीय स्वामी जी तथा विद्वानों के प्रवचन, मन्त्र-जप, भजन-कीर्तन इत्यादि के साथ मनाया गया।

बारिपदा (उड़ीसा): दिनांक ६ जून और ४ जुलाई के शाखा के मासिक 'साधना-दिन' के उपरान्त दिनांक ३० जुलाई को विशेष चल-सत्संग, २१ जून को विशेष पादुका-पूजन और सत्संग आयोजित हुए। कुष्ठरोगियों की एक संस्था में ९२ मरीजों को औषधियों का निःशुल्क वितरण हुआ। श्री गुरु-पूर्णिमा के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, विशेष सत्संग, प्रसाद-सेवन, वृद्धाश्रम में नारायण-सेवा आदि समाविष्ट थे। दिनांक ४ जुलाई को, कुष्ठ-रोगियों की एक संस्था के १०० अन्तेवासियों को अन्नदान किया गया।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने दैनिक पूजा और प्रति रविवार को पादुका-पूजा परिचालित करके, परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम सम्पन्न किया।

भवानीपटना (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ प्रति सप्ताह दो सत्संग, मासिक साधना-दिन तथा 'शिवानन्द-दिन' को विशेष सत्संग। विशेष गतिविधियाँ : श्री गुरुपर्णिमा : (२) रथयात्रा दिनांक २६ जून से दिनांक २१ जुलाई पर्यन्त रंग-बिरंगे वस्त्रों में सज्ज सहस्रों आदिवासियों सहित यह यात्रा, दिनांक १३ जुलाई को गुंडीचा यात्रा में परिणत हो कर ३००० व्यक्तियों को अन्नप्रसाद मध्याह्न

को वितरित हुआ। दिनांक २१ जुलाई को 'बाहुड़ा-यात्रा' के पश्चात् भी अन्न-प्रसाद वितरित हुआ।

ब्रह्मपुर, लांझीपल्ली (उड़ीसा): शाखा ने श्री गुरु-पूर्णिमा को विशेष उत्सव आयोजित करके पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन तथा निर्धनों को अन्नदान और वस्त्रदान किये।

राउरकेला (उड़ीसा): शाखा द्वारा मासिक सत्संग दिनांक ११ जुलाई, प्रति मंगलवार को मातृ-सत्संग, प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम पारायण तथा उभय एकादशी की तिथियों को, श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र तथा श्रीमद् भगवद्गीता पारायण क्रमशः सम्पन्न करके श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग पूर्ण किये। राउरकेला, नेहरुनगर शाखा भी इसमें प्रतिभागी हुई।

भीमकाण्ड (उड़ीसा): शाखा की दैनिक प्रभातीय पादुका-पूजा, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग सुचारु रूप से पूर्ण हुए।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): दैनिक सान्ध्य सामूहिक, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ के अतिरिक्त, श्री हरिशयनी एकादशी को बहुसंख्य भक्तों की प्रतिभागिता से यह पाठ परिचालित हुआ। श्री गुरु-पूर्णिमा को गुरु-पूजा एवं यह पारायण सम्पन्न हुआ।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा के दैनिक, प्रदोष के दिन विशेष पूजा, साप्ताहिक १३ और ३१ जुलाई को 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण' की अपेक्षित सम्पन्नता के आधिक्य में, श्री शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा, श्री चिदानन्द-दिन को हवन तथा श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, प्रसाद-वितरण पूर्ण हुए एवं बालकों को श्रीमद् भगवद्गीता तथा अन्य श्लोकों की तालीम, योगासन-वर्ग, शिवानन्द लाइब्रेरी और छात्रों को आर्थिक सहाय का सातत्य रहा।

छत्रपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्नह्नदैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग, जून माह की ११ और १९ तारीखों को एवं जुलाई के दिनांक १८ को तीन चल-सत्संग तथा समीपवर्ती ग्राम में एक चल-सत्संग और रथयात्रा-निमित्त एक विशेष चल-सत्संग। शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन और संक्रान्ति के कार्यक्रमों के अतिरिक्त श्री गुरु-पूर्णिमा को प्रभातीय पादुका-पूजा, प्रवचन सहित विशेष सान्ध्य-सत्संग और इसके अनुसरण में ९ दिवसीय दैनिक प्रातःकालीन ध्यान-प्रार्थना सम्पन्न हुए।

चेन्नै, वॉषरमेनपेट (तमिल नाडु): शाखा ने आराधना-दिन को, जो कि उसका ३४ वाँ स्थापना-दिन भी है, एक विशेष उत्सव आयोजित किया, जिसमें गुरु-पूजा, स्तोत्र-पाठ, भजन-आरती-प्रसाद आदि समाविष्ट थे।

ढेंकानाल (उड़ीसा): शाखा द्वारा श्री गुरु-पूर्णिमा और आराधना-दिन पादुका-पूजा, प्रवचन, भक्ति-संगीत और प्रसादयुक्त मनाये गये।

दिगपंहडी (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति गुरुवार और रविवार कोह्नह्नइस प्रकारह्नह्नसाप्ताहिक द्विवार सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा एवं संक्रान्ति-दिन को विशेष सत्संग आयोजित किये।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): दैनिक पूजा-आरती और जप तथा माहभर के श्री रामचरित मानस के पाठ के समापन पर, प्रति माह पूर्णिमा को पूर्णाहुति महायज्ञ के आधिक्य में, शाखा ने, स्वाध्याय, मानस-गान, पादुका-पूजा, हर बुधवार को साप्ताहिक सत्संग पूर्ण किये। आराधना-दिन को, पादुका-पूजा, हवन, विशेष सत्संग, कीर्तन तथा प्रसाद-सेवन की सम्पन्नता हुई।

गूडूरु (आन्ध्र प्रदेश): प्रति रविवार के आध्यात्मिक प्रवचन युक्त साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त शाखा ने स्थानिक जेल (कारागार) के कैदियों हेतु साक्षरता-प्रसार के लिए, शाखा के अध्यक्षश्री द्वारा, ''हर एक पापी को सन्त बनने का उज्ज्वल भविष्य होता है,'' इस गुरु की उक्ति की यथार्थता पर एक प्रवचन दिया गया। उन्हें स्लेट-पाटियों का वितरण किया गया। आदरणीय श्री स्वामी रामयोगी जी की महासमाधि पर एक विशेष प्रार्थना-सभा आयोजित हुई।

गुड़गाँव (हरियाणा): नियमित गतिविधियाँह्नह्नसाप्ताहिक सत्संग, मातृ-सत्संग, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, एकादशी की उभय तिथियों को कथा-हवन, प्रति पूर्णिमा को श्री सत्यनारायण-कथा और भजन-कीर्तन, प्रति माह, अन्तिम रविवार को बहुसंख्य भक्तों को भण्डारा अन्नदान और स्वास्थ्य-केन्द्रह्नह्नजिसने ४९३ मरीजों के गत तीन माह में इलाज किये। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्री राम-कथा (अप्रैल १२ से २०)। (१) परम पूज्य ब्रह्मलीन श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर दिनांक ७ मई को, विशेष सत्संग, भण्डारा।

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश): श्री गुरु-पूर्णिमा उत्सवह्नह्न२५० भक्तों की प्रतिभागिता के मध्य, श्री गणेश-पूजा, पादुका-पूजा, रुद्राभिषेक, श्री पुरुष-सूक्तम्, श्री-सूक्तम्, श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र,

श्री सत्यनारायण पूजा, हवन, प्रवचन, प्रसाद-सेवन तथा रात्रिभर भजन-कीर्तन आदि सम्पन्न हुए।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): शाखा की नियमित गतिविधियाँ॥दैनिक अध्ययन-कक्ष, प्रति रविवार को हवन और सत्संग; प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग, प्रातः, दैनिक १ घण्टे का ध्यान, योगासन-वर्ग प्रातः और सायंकाल, प्रति मंगलवार को निर्धनों को अन्नदान, श्री स्वामी शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय। श्री गुरु-पूर्णिमा उत्सव में पादुका-पूजन में बहुसंख्य भक्त उपस्थित रहे और उसमें भाग लिया।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): प्रति रविवार को प्रभातीय साप्ताहिक सत्संग, दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को डेढ़ घण्टे पर्यन्त महामृत्युंजय-मन्त्र का सामूहिक जप; प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड-पारायण; मातृ-सत्संग हर सोमवार को अपराह्न में; दैनिक प्रभातीय देवीभागवत-कथा, एकादशी-कथा, प्रति पूर्णिमा को श्री सत्यनारायण-कथा। शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय॥जिसने मई और जून की माहावधियों में २८५४ मरीजों के इलाज किये; २६ विधवा महिलाओं को आर्थिक सहाय (प्रतिमाह रु. १५०/-), निर्धनों को दैनिक अन्नदान; कुष्ठरोगियों की एक संस्था में कोरे राशन का वितरण, १०५ छात्रों को प्रतिमाह छात्रवृत्ति (प्रतिमाह कुल रु. २५,०००), दैनिक प्रातःकालीन योगासन-वर्ग और स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय॥इन सब नियमित गतिविधियों के उपरान्त, विशेष गतिविधियों में, परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज का जन्म-जयन्ती उत्सव दिनांक ५ मई को, मई के दिनांक ५ से ११ पर्यन्त भागवत-सप्ताह, दिनांक १० जून को महामृत्युंजय-हवन, दिनांक ८ और २९ जून को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

जयपुर (उड़ीसा): शाखा की दैनिक, साप्ताहिक, द्विवार, शिवानन्द-दिन के प्रभातीय और सान्ध्य विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम, दो चल-सत्संग आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त, शाखा ने, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' के सम्पुट सहित, भगवद्गीता के प्रत्येक श्लोक सहित आहुति दे कर गीता यज्ञ किया। इसके पूर्व, दिनांक १२ से दिनांक २४ पर्यन्त 'पंचदशी' पर एक वर्ग आयोजित किया। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर १० घण्टों के आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा पूज्य श्री स्वामी गुरुसेवानन्द जी की षोडशी सम्पन्न हुए। १६ ब्राह्मणों को यथाविधि भोजन-दान-दक्षिणा तथा भक्तों को अन्न-प्रसाद का वितरण हुआ।

काकिनाड, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर तथा श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग आयोजित हुए।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा ने साप्ताहिक सत्संग, मातृ-सत्संग, पुरुषों तथा महिलाओं के लिए क्रमशः प्रभातीय और सायंकालीन योगासन-वर्ग, प्रति रविवार को ध्यान-वर्ग एवं श्री पूज्य स्वामी देवानन्द होमियोपैथिक औषधालय-सेवा सुचारु ढंग से सम्पन्न की।

मोईरंग (मणिपुर): शाखा ने बालकों द्वारा दैनिक कीर्तन तथा प्रार्थनाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न करके, रथयात्रा-उत्सव के दौरान दो विशेष सत्संग आयोजित किये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गतिविधियाँ॥ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-स्तोत्र, सायंकालीन सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग, मातृ-सत्संग तथा प्रतिमाह दिनांक ३ को ६ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र-कीर्तन। विशेष गतिविधियाँ॥(१) श्री गुरु-पूर्णिमा : पादुका-पूजा॥विशेष सत्संग और प्रवचन। (२) दिनांक १८ जुलाई को हवन।

नीमापडा (उड़ीसा): शाखा की दैनिक १ घण्टे का महामन्त्र-कीर्तन श्रीमद्भागवत-पाठ, प्रभातीय पादुका-पूजा, साप्ताहिक सान्ध्य-सत्संग और प्रति माह के अन्तिम रविवार को मासिक साधना-दिन आदि नियमित गतिविधियाँ सुचारु रूप से सम्पन्न हुईं।

पटना (बिहार): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, चिदानन्द-दिन को निर्धनों को अन्नदान, श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा और स्वाध्याय आदि शाखा की नियमित और विशेष गतिविधियाँ थीं।

फुलबानी (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ॥दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा। विशेष गतिविधियाँ॥श्री गुरु-पूर्णिमा : 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र सहित पादुकाओं की लक्षार्चना और विधिवत् पूजा; पश्चात् महामन्त्र के साथ अर्चना; निर्धनों को अन्नदान और सायंकालीन सत्संग।

राजकोट (गुजरात): शाखा के साप्ताहिक सत्संग रविवार, शनिवार और गुरुवार को, दैनिक सत्संग का एक अन्य केन्द्र पर,

मातृ-सत्संग प्रति शुक्रवार को सम्पन्न होते हैं। श्री रामनवमी को साधना-सप्ताह तथा दिनांक २६ जून को भजन-सन्ध्या का आयोजन हुआ। माह अप्रैल से जून पर्यन्त शाखा द्वारा समाज-सेवाह्वह्व(१) होमियोपैथिक औषधालय : १५०० मरीजों के इलाज किये गये। (२) नेत्र-चिकित्सा : ८ निःशुल्क नेत्र-यज्ञ किये गये। उसके द्वारा १४४२ मरीजों के इलाज़ हुए, वीरनगर में १६२ मरीजों की शल्य-क्रिया सम्पन्न हुई। (३) दन्त-चिकित्सा : हर मंगलवार को और निःशुल्क सेवा होती है। प्रति सप्ताह ४०-५० मरीजों के इलाज, ३ मरीजों को निःशुल्क सम्पूर्ण कृत्रिम दाँत, ४ दन्त-यज्ञ (२८१ मरीजों और २७० बाल-मरीजों के इलाज)। ७ हृदयरोग के १ कैन्सर मरीज को आर्थिक सहाय, एक विधवा को १ ठेला-दान। निःशुल्क आयुर्वेदिक क्लिनिक द्वारा जून १२, २०, २७ को ३०० मरीजों के इलाज तथा एक गरीब विधवा स्त्री को 'जयपुर पाँव' निःशुल्क लगाया गया।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा ने तीन चल-सत्संग; प्रभातीय पादुका-पूजा; सायंकालीन सत्संगह्वह्वप्रसाद-सेवन; दिनांक ४ जुलाई को, तीन डाक्टरों के सहयोग से, १७५ मरीजों के इलाजयुक्त एक निःशुल्क मेडिकल कैम्प आयोजित किया।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक प्रभातीय पूजा और सान्ध्य-सत्संग, मासिक गीता-पारायण, साधना-दिन, श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा। विशेष गतिविधियाँह्वह्व दिनांक २७ जून को विशेष सत्संग, ६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र जप, संक्रान्ति को, श्री हनुमान चालीसा के १०८ बार पाठ।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक बाल-विकास सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा संक्रान्तियों को ३ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड जप आदि नियमित गतिविधियों के आधिक्य में शाखा की विशेष गतिविधियों में (१) श्री गुरु-पूर्णिमा उत्सव : ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सत्र, प्रभातफेरी, प्रभातीय पादुका-पूजा, सांन्ध्य सत्संग और स्वाध्याय और कुष्ठरोगियों की एक संस्था में स्वास्थ्य-कैम्प; (२) दिनांक ३१ जुलाई को ३ घण्टों का महामन्त्र-कीर्तन; (३) दिनांक २६ जुलाई से दिनांक ४ अगस्त पर्यन्त १० दिवसीय साधना-सत्र; (४) दिनांक १८ जुलाई को, दत्तक लिये हुए ग्राम में स्वास्थ्य-कैम्प।

सुनाबेडा (उड़ीसा): साप्ताहिक द्विवार सत्सगं, 'सावित्री-व्रत अमावास्या' को विशेष कार्यक्रम का आयोजन और रथयात्रा आदि शाखा ने सुचारु रूप से सम्पन्न किये।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक प्रभातीय पूजा, श्रीमद्भागवत-पाठ, महामृत्युंजय-मन्त्र-जप, दैनिक १ घण्टे का सान्ध्य-महामन्त्र-कीर्तन, साप्ताहिक द्विवार सत्संग, बाल-सत्संग, नारायण-सेवा, एकादशी-सत्संग, चिदानन्द-दिन को १२ घण्टों का अखण्ड महामत्युंजय-मन्त्र-जप। विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री गुरु-पूर्णिमा उत्सव में ब्राह्ममुहूर्तीय पूर्वाह्व और सान्ध्य आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा दिनांक २६ जुलाई से श्रीमद् भागवतम् का माहभर का पारायण और प्रवचन।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दिनांक ११ जुलाई को सत्संग, दिनांक १८ जुलाई को चल-सत्संग तथा श्री गुरु-पूर्णिमा को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग सम्पन्न किये।

विशाखपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक महामन्त्र संकीर्तन और भजन प्रति सोमवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति शुक्रवार को स्तोत्रपाठ और संकीर्तन, दैनिक योगासन-वर्ग तथा प्रति सोमवार को निःशुल्क स्वास्थ्य-चिकित्सा। विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री गुरु-पूर्णिमा : पादुका-पूजा, भजन, संकीर्तन, प्रसाद-सेवन। १२० भक्तों ने भाग लिया।

वरंगल (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा श्री गुरु-पूर्णिमा को आध्यात्मिक कार्यक्रमह्वह्व पादुका-पूजा, स्तोत्र-पाठ तथा आध्यात्मिक प्रवचन आयोजित किये गये।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन): शाखा के क्रमशः ४१ और ६० प्रतिभागियों युक्त दिनांक १० अप्रैल और ८ मई को मासिक सत्संग किये। महामृत्युंजय मन्त्र-जप से प्रारम्भ हो कर, "The Voice of Himalayas" पुस्तक के स्वाध्याय, आरती, प्रसाद से सम्पन्न हुआ। शेष शनिवारों को, उपस्थित भक्तों द्वारा, एक घण्टे पर्यन्त महामन्त्र-जप किया जाता है। नियमित योगासन-वर्गों में १८४ और २८४ प्रतिभागी थे। अप्रैल माह के दिनांक २४ से माह मई के दिनांक २९ पर्यन्त योग कार्य-शिविर सम्पन्न हुआ। शाखा ने रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा भूकम्प-ग्रस्त लोगों को दान दिया। शाखा, विविध समाज-सेवाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है।

पावन-स्मृति में

श्री स्वामी रामयोगी

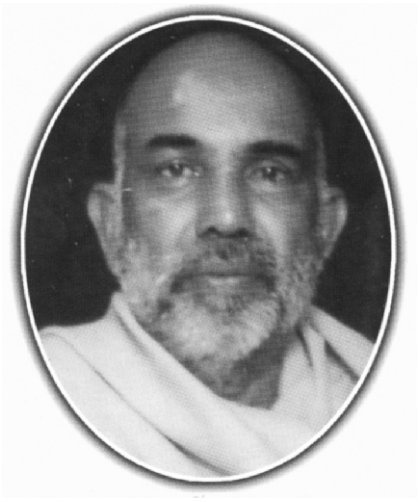

गहन दुःख, हानि और अभाव सहित हम, आन्ध्र प्रदेश के श्रीकाकुलं जिले के लयिदां ग्राम में, दिनांक २७ जुलाई, २०१० को प्रातः १-३० के समय पर आदरणीय श्री स्वामी रामयोगी जी महाराज की महासमाधि की सूचना देते हैं।

संन्यासाश्रम के पूर्व श्री रामचन्द्र राव नायुडु के नाम को धारण करने वाले आदरणीय स्वामी जी का जन्म वर्ष १९४३ में लयिदां ग्राम में हुआ था। विजयनगरम् में, एम. आर. कॉलेज में विद्याप्राप्ति के पश्चात् उन्होंने विज्ञान के अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक के पद से भी अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। उनकी समर्पित सेवा की स्वीकृति के रूप में उन्हें 'उत्तम अध्यापक' के पुरस्कार से सन्मानित किया गया।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुस्तकों के अध्ययन से अत्यधिक प्रेरित वे 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' के कार्य-व्यापार से संलग्न हुए। उन्हें वर्ष १९९९ में पावन संन्यासाश्रम में दीक्षित किया गया।

श्री स्वामी जी ने आन्ध्र प्रदेश में दिव्य जीवन के सन्देश के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पण तथा अथक परिश्रम किये। उन्होंने आदरणीय श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जीवन-काल और उनकी महासमाधि के पश्चात् समस्त आन्ध्र प्रदेश द डिवाइन लाइफ सोसायटी परिषदों का आयोजन किया। उन्होंने 'शिवानन्द दिव्य जीवनम्' नामक पत्रिका के सम्पादन तथा प्रकाशन द्वारा सद्गुरुदेव के आध्यात्मिक साहित्य के प्रसार के दिव्य ध्येय की पूर्ति हेतु प्रयास किये। उन्होंने लयिदां ग्राम में 'शिवानन्द धर्म क्षेत्र' नामक द डिवाइन लाइफ सोसायटी की एक शाखा स्थापित की। इस शाखा द्वारा चैरिटेबल औषधालय, एक वृद्धाश्रम, 'योग-वेदान्त स्कूल', एक पोस्ट-ऑफिस और श्री सीताराम मन्दिर कार्यरत हो कर सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं। गत थोड़े वर्षों पर्यंत, श्री स्वामी जी 'सीताराम पुष्करिणी' ह्न लयिदां ग्राम के आश्रम के समीपवर्ती पार्श्वस्थ, पानी के तालाब के निर्माण-कार्य में सक्रिय थे। इस तालाब द्वारा लयिदां ग्राम की आवश्यकताओं का प्रबन्ध तथा 'तेप्पोत्सवम्' ह्न भगवान् श्री रामचन्द्र जी के उत्सव परिचालन का लक्ष्य है।

श्री स्वामी जी के पार्थिव शरीर को २८-७-२०१० को प्रातः ९ बजे लयिदां आश्रम में, श्रीराम मन्दिर के समीप भू-समाधि दी गयी। तब बहुसंख्य लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आये।

उनकी आत्मा को परमात्मा तथा पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणों में आश्रय प्राप्त हो, यही प्रार्थना है!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

द डिवाइन लाइफ सोसायटी उत्तरी क्षेत्र का आध्यात्मिक सम्मेलन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से द डिवाइन लाइफ सोसायटी के उत्तरी क्षेत्र का क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन तथा द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव २० और २१ नवम्बर २०१० को पंजाब के पटियाला शहर में, सामिआना गेट के निकट गीता भवन में हो रहा है।

इस सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त तथा स्थानीय संस्थाओं से अन्य सन्त एवं विद्वान् सज्जन पधार कर आशीर्वचन प्रदान करेंगे। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के सदस्यों एवं भक्तों को इस सम्मेलन में सादर निमन्त्रण है। सम्मेलन का उद्देश्य अध्यात्म-ज्ञान का प्रचार एवं विश्व-शान्ति है।

नामांकन के लिए सम्पूर्क सूत्रह्ह

१. डा. रमेश चन्द्र शर्माह्ह०९२१७७०५४७७; २. श्री चमन कालियाह्ह०९४६३३७७१३९;

३. श्री सुरेन्द्र गर्गह्ह०९९१४०८५८१४; ४. श्री सुदेश गुप्ताह्ह०९८८८१८४६१४;

५. डा. अजय गुप्ताह्ह०९८७२०३११११५

अखिल उड़ीसा द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३३ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से अखिल उड़ीसा द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३३ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर २८ से ३० दिसम्बर २०१० तक उड़ीसा को अंगुल जिले के बिजिगोल में पंचायत हाई स्कूल (एन. टी. पी. सी. के निकट) में होना निश्चित हुआ है। कार्यक्रम के ही एक भाग के रूप में युवा शिविर भी २७ से ३० दिसम्बर २०१० तक होगा।

सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त तथा अन्य संस्थाओं से भी विद्वान् सज्जन एवं सन्त सम्मिलित हो कर आशीर्वचन प्रदान करेंगे। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के सदस्य भक्तों को सादर आमन्त्रण है कि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व कल्याण मंगल के उद्देश्य को ले कर किये जाने वाले इस सम्मेलन में भाग लें।

१. प्रतिनिधि शुल्क रु. ३५०/- प्रति व्यक्ति

२. युवा शिविर नामांकन शुल्क रु. ११/- प्रति व्यक्ति

३. युवा शिविर के लिए निर्धारित आयुह्ह१५ से २५ वर्ष (पहचान प्रमाण-पत्र सहित)

४. प्रतिनिधि शुल्क की अन्तिम तिथिह्ह१५ दिसम्बर २०१०

सभी धन-राशि कृपया 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, भीमकांड शाखा' के नाम से बैंक ड्राफ्ट या चैक से भेजें। बैंक ड्राफ्ट या चेक का देय 'स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (भारतीय स्टेट बैंक), तेलसिंघा (Telesingha) शाखा (एन.पी.टी.सी. कैम्पस, कोड ०६२५७) में होना चाहिए।

पत्र-व्यवहार सूत्र

द डिवाइन लाइफ सोसायटीह्ह भीमकांड शाखा, पो.आ. बिजिगोलह्ह७५९ ११७, जि. अंगुल, उड़ीसा

सम्पर्क सूत्रह्हअक्षय कुमार दास मो. ०९४३७०४३२२५; निरंजन प्रधानह्ह०९४३७०८१२२३

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण का तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मीकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम

२. लिंग और आयु

३. राष्ट्रीयता

४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता

५. ई-मेल का पता

६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर

७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*

८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध

९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका

१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?

११. आगमन का उद्देश्य

१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)

१३. आगमन की तिथि-तारीख

१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायह्वह्वपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों को अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

---

* स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य-समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी। **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द